maryammagazine.in

SEP 2020 - 30:00

मरयम

यह वक़्त भी गुज़र जाएगा

ख़ुदा के बैंक में डिपॉज़िट कीजिए

ज़िंदगी की सबसे बड़ी सीख

प्राब्लम्स का साइंटिफ़िक हल ढूँढिए

حسین

صلی اللہ علیک یا اباعبداللہ الحسین

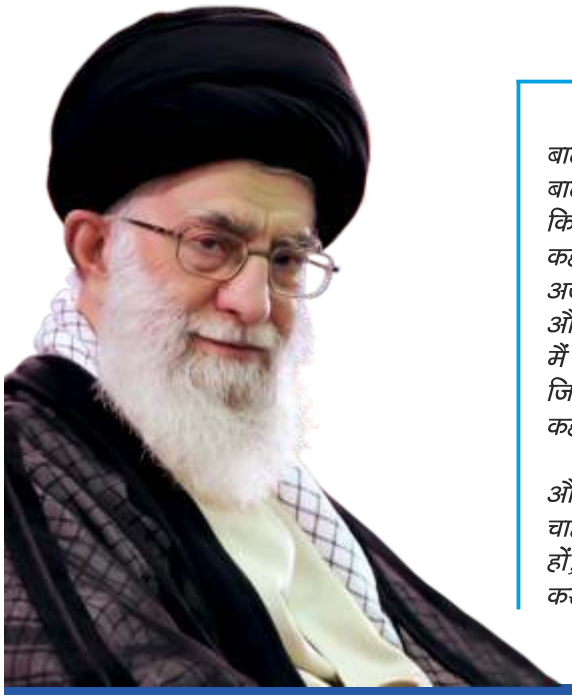

सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई का मैसेज

इस बार मोहर्रम के बारे में बहुत सी बातें कही जा रही हैं और हर एक अपनी बात सामने रख रहा है। अज़ादारी किसी न किसी हाल में होना ही है। मुझे जो बात कहना है वह यह है कि आज के हालात में अज़ादारी का पैटर्न वह बातें हैं जो मेडिकल और हेल्थ एक्सपर्ट हम से कह रहे हैं। ख़ुद मैं भी उन्हीं सारी बातों पर अमल करूँगा जिनका ध्यान रखने के लिए यह लोग कहेंगे।

जो लोग भी अज़ादारी करना चाहते हैं और अज़ादारी में शामिल होना चाहते हैं, चाहे वह अन्जुमनें हों, मजलिसें पढ़ने वाले हों, मजलिसें करवाने वाले हों, ज़ाकिरी करने वाले हों, नौहे पढ़ने वाले हों या फिर दूसरे लोग, इन सब से मैं यही कहना चाहता हूँ कि जो कुछ हेल्थ एक्स्पर्ट्स आपसे कह रहे हैं बस उसी पर अमल कीजिए।

अगर उनकी तरफ़ से अज़ादारी के लिए कोई गाइड-लाइन दी जाती है तो हम सब की ज़िम्मेदारी है कि उस गाइड-लाइन पर अमल करें और यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है बल्कि बहुत बड़ी चीज़ है।

अभी किसी हद तक यह बीमारी कन्ट्रोल में है और काफ़ी हद तक हालात बेहतर हैं लेकिन ख़ुदा न करे कि अगर लापरवाई बरती गई या ढील दे दी गई तो बहुत बड़ी मुसीबत आ जाएगी जिसे कन्ट्रोल करना आसान नहीं होगा।

अज़ादारी गाइड-लाइंस

आयतुल्लाह सीस्तानी का मैसेज

इमाम हुसैन[अ] की अज़ादारी करने के लिए कई रास्ते अपनाए जा सकते हैं जैसेः

1- टी.वी. चैनलों और साइबर स्पेस के ज़रिये इमाम हुसैन[अ] की मजलिसों को ज़्यादा से ज़्यादा लाइव-टेलीकॉस्ट किया जाए। इस सिलसिले में दीनी सेंटर्स और दीनी व कल्चरल इदारों को चाहिए कि वह अच्छे ज़ाकिरों व नौहा ख़्वानों को दावत दें। साथ ही मोमिनीन को इस बात पर भी उभारें कि वह अपने-अपने घरों में या इस जैसी दूसरी जगहों पर रह कर ही मजलिसें सुनें।

2- इसी तरह घरों में दिन या रात का कोई एक ख़ास वक़्त तय करके अज़ादारी की जाए जिसमें सिर्फ़ घर वाले या साथ में उठने-बैठने वाले लोग ही शरीक हों। जो मजलिसें लाइव-टेलीकास्ट हो रही हैं या इंटरनेट पर पहले से मौजूद हैं उन्हें सुनकर भी अज़ादारी की जा सकती है।

3- जहाँ तक आम मजलिसों की बात है, अगर उनमें शरीक होना है तो मेडिकल गाइड-लाइंस पर पूरी तरह से अमल किया जाए यानी मजलिस में मौजूद लोगों के बीच सोशल-डिस्टेंसिंग का भरपूर ध्यान रखते हुए मॉस्क और कोरोना को फैलने से रोकने वाली दूसरी सभी ज़रूरी चीज़ों को इस्तेमाल में लाया जाए।

इन मजलिसों में इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि एडमिनिस्ट्रेशन जितने लोगों की तादाद तय कर दे उतने ही लोग मजलिसों में शरीक हों।

4- करबला और आशूरा से जुड़ी बातों और चीज़ों को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचाया जाए। चौराहों, सड़कों, गलियों और पब्लिक प्लेसेस पर पब्लिक प्रॉपर्टी को नुक़सान पहुँचाए बिना और मुल्क के क़ानून पर अमल करते हुए परचम व काले झंडे लगाए जाएं।

बेहतर है कि इन झंडों या फ़्लैक्स पर और इस तरह की दूसरी चीज़ों पर इमाम हुसैन[अ] की हदीसें और उनकी बातें, करबला व आशूरा के बारे में मशहूर स्कॉलर्स की कही हुई बातें और उनके शेर वग़ैरा लिखे जाएं।

लोगों को खाना खिलाने या तबर्रुक बाँटते वक़्त खाने की तैयारी और तबर्रुक बाँटने में मेडिकल गाइड-लाइंस का पूरा ध्यान रखा जाए, चाहे इन गाइड-लाइंस पर चलने के लिए खाना बाँटते वक़्त भीड़ से बचने के लिए सिर्फ़ सूखा खाना देना पड़े या फिर मोमिनीन के घरों तक तबर्रुक पहुँचा दिया जाए।

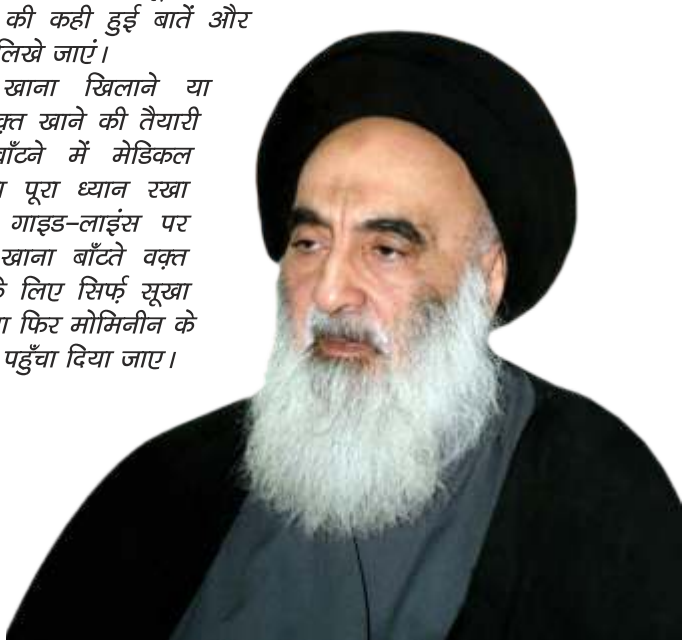

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

आयतुल्लाह तसख़ीरी

18 अगस्त 2020

अभी पिछले ही दिनों आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी का इंतेक़ाल हुआ था और अब आयतुल्लाह तसख़ीरी भी हमारे बीच नहीं रहे।

आयतुल्लाह तसख़ीरी इस्लामी इंक़ेलाब के एक बहुत बड़े और बहुत मज़बूत पिलर थे।

इंटरनेशनल सेंटर "तक़रीबे मज़ाहिबे इस्लामी" के सालों साल हेड भी रहे थे। दूसरी तरफ़ सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई के बड़े ही क़रीबी साथी और उनके एडवाइज़र भी थे।

आयतुल्लाह तसख़ीरी ने अपनी पूरी ज़िंदगी मुस्लिम युनिटी की ख़ुश्बू चारों ओर फैलाने में लगा रखी थी। अगर उनकी पूरी ज़िंदगी का निचोड़ देखा जाए तो मुस्लिम युनिटी के लिए उनकी अनथक कोशिशें ही उनकी पहचान थी।

आयतुल्लाह तसख़ीरी का इंतेक़ाल इस्लाम और मुसलमानों के लिए एक बहुत बड़ा नुक़सान है।

RNI No: UPHIN/2012/43577 Monthly Magazine

मरयम

Vol:9 | Issue: 07 | SEPTEMBER, 2020

इस महीने आप पढ़ेंगी...

शौहर का दिल जीतने के कुछ फ़ार्मूले	6
इमाम सज्जाद[AS] की 4 हदीसें	8
सूरए फ़ील	10
प्राब्लम्स का साइंटिफ़िक हल ढूँढिए	13
इमाम मूसा काज़िम[AS] की ज़िंदगी...	15
शैतान की चालों को समझिए	17
मुस्लिम बिन औसेजा और हबीब इब्ने मज़ाहिर	20
इबादत की रूह	22
इमाम सज्जाद[AS] क्यों रोया करते थे?	24
माएं, मोबाइल और बच्चे	26
ख़ुदा की सिफ़तें (2)	29
यह वक़्त भी गुज़र जाएगा	31
इमाम काज़िम[AS] का जिहाद	34
ख़ुदा के बैंक में डिपॉज़िट कीजिए	35
शरई अहकाम	37
क़ुरआन की तरफ़ लौटने में ही भलाई है	38
ज़िंदगी की सबसे बड़ी सीख	41

Chief Editor
S. Mohd. Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
Mohd. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi
Imtiyaz Abbas Rizwan

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Mohammad Aqeel Zaidi

Distribution Manager
Baqir Hasan Zaidi

Contributors
Sajjad Haider Safavi
M. Husain Zaidi

Graphic Designer
Siraj Abidi
98390 99435
imagine graffix

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नही है। 'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले संपादक से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कॉन्टेन्ट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कार्रवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद हम किसी भी तरह की पूछताछ और कार्रवाई पर जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक 'मरयम' के लिये आने वाले कॉन्टेंट्स में ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi
printed at Swastika Prinwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and
published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003

MARYAM A/C: 55930 10102 41444 **Union Bank of India**
Tahseenganj Branch (Unity Branch) Lucknow **IFSC: UBIN0555932**

सब्क्रिप्शन के लिए चेक/ड्राफ़्ट पर सिर्फ़ **MARYAM** लिखिए।
चेक, ड्राफ़्ट और मनी आर्डर इस पते पर भेजिए:
Mohd. Hasan Naqvi, 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 99566 20017, email: maryammonthly@gmail.com

Head Office: Imambada Ghufranmab, Chowk Mandi, Lucknow
Registered Office: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

आँसू बहाने और अज़ादारी करने पर हदीसों में इतना ज़ोर इसलिए दिया गया है क्योंकि किसी शहीद पर आँसू बहाने से इंसान के अंदर शहादत का जज़्बा पैदा होता है... ।

आँसू की ख़ासियित यह है कि यह उस रंग में रंग जाता है जिसके नाम पर आँसू बहाए जा रहे होते हैं और यही रंग आँसू बहाने वाले पर भी चढ़ जाता है ।

इसीलिए हुसैनी रंग में रंगा हुआ न किसी पर जुल्म करता है और न जुल्म को बर्दाश्त करता है ।

आयतुल्लाह
जवादी आमुली

■ उम्मे ईमान

शौहर का दिल जीतने के कुछ फ़ार्मूले

यूँ तो शादी के बाद की ज़िन्दगी में ख़ुशहाली, इन्ट्रेस्ट और मिठास पैदा करने की ज़िम्मेदारी मियाँ-बीवी दोनों की होती है, लेकिन घर के माहौल को जन्नत बनाए रखने में सलीक़े वाली और समझदार बीवी का रोल ज़्यादा है। शौहर को ख़ुश रखने और घर के मामलों में आराम-सुकून बनाए रखने के लिए बीवी को बहुत सी बातें बर्दाश्त करना पड़ती हैं, जिनमें से कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें वह पसन्द भी नहीं करती, लेकिन अगर बीवी शौहर के लिए कम्प्रोमाइज़ करने और फ़िदा करने का गुर अपनाती है और उसकी वह बातें भी मुस्कुराते हुए बर्दाश्त करती है जो उसे पसन्द नहीं हैं तो शौहर के दिल में उसके लिए एक बहुत बड़ी जगह बन जाती है जिसमें शुक्रिया भी होता है और मोहब्बत भी। वक़्त के साथ-साथ यह मोहब्बत बीवी पर पूरे भरोसे और अटूट बंधन के जज़्बों में बदल जाती है।

ग़लतियाँ और बुरी आदतें मियाँ-बीवी दोनों में पाई जा सकती हैं, लेकिन निभाने का जज़्बा रखने वाली औरत शौहर की बहुत सी ग़लतियों को सब्र के साथ बर्दाश्त करती है, और ज़रा-ज़रा सी बातों पर कुढ़ कर अपना ख़ून नहीं जलाती, बल्कि अपनी आदतों और तरीक़ों को शौहर की पसन्द और नापसन्द के मुताबिक़ ढालने की कोशिश करती है।

आप कह सकती हैं कि यह मश्वरे मर्दों के लिए भी होने चाहिएं, लेकिन हमारे ख़याल में घर की जन्नत में औरत की हुकूमत होती है, और इस हुकूमत की रानी होने की वजह से उसकी यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपनी हर कोशिश इस जन्नत को जन्नत बनाए रखने के लिए लगातार करती रहे।

आइए! कुछ ऐसी बातें सीखते हैं जिनके ज़रिये बीवियाँ अपने शौहरों का दिल बड़े आराम से जीत सकती हैं:

– बार-बार शौहर पर क्रेटिसाइज़ करना, टोकना, पिछली ग़लतियों को बार-बार दोहराना शौहर को पसन्द नहीं होता और यह चीज़ उसके बर्दाश्त से बाहर होती है। अगर शौहर से ग़लती हो गई हो और माफ़ी माँग कर नाराज़गी ख़त्म हो चुकी हो तो बार-बार उसको दोहराना और याद दिलाना सही नहीं है। इसका मतलब यह होगा कि आपके दिल में शौहर की तरफ़ से अभी भी मैल रखा है और आप बदगुमानी का शिकार हैं। शौहर यह बात महसूस करके दूर-दूर रहने का बिहेवियर अपनाने लगता है।

– लालच हर लिहाज़ से एक बुरी आदत है, लेकिन अगर शौहर को यह लगने लगे कि बीवी सिर्फ़ पैसों की वजह से उस से मोहब्बत करती है तो मोहब्बत की बुनियाद रेत से बनने लगती है जिसके गिरने का ख़तरा हर पल होता है। ऐसे में शौहर बीवी के साथ बाज़ार जाने से हिचकिचाने लगता है। मियाँ-बीवी के रिश्ते में दिखावा बिल्कुल नहीं होना चाहिए। जो

भी हो वह एक-दूसरे के लिए हो और यह बात दोनों को महसूस भी होना चाहिए।

– शौहर बीवी के सर का ताज होता है, लेकिन रानी वह ख़ुद ही होती है। इसलिए शौहर को घर और बच्चों के छोटे-छोटे मामलों और फ़ैसलों में न उलझाइये। ख़ुद ही फ़ैसला करने का हुनर सीखिये और फिर उस से होने वाले फ़ायदों और नुक़सान को भी बर्दाश्त कीजिए। हर वक़्त अपनी परेशानियों का रोना शौहर के सामने न रोईये, इस से वह परेशान भी होगा और उसका दिल भी उचाट होगा।

– शौहर की पिछली ज़िंदगी को ज़्यादा खंगालने की कोशिश मत कीजिए। वह पहले जो कुछ था, वह अब उसकी पिछली ज़िंदगी का हिस्सा है। अब वह आपका शौहर है, इसलिए उसे बार-बार उसका गुज़रा हुआ वक़्त याद न दिलाईये। ख़ुद भी प्रेज़ेन्ट में ज़िन्दा रहिये और शौहर को भी प्रेज़ेन्ट में ही ज़िन्दा रहने दीजिए।

– ज़्यादा बातें और फ़ाल्तू बातचीत भी अच्छी आदत नहीं होती लेकिन शौहर के सामने बहुत सलीक़े और आर्ट के साथ सही वक़्त पर मुनासिब और ज़रूरी बातें ज़रूर कीजिए।

– शौहर के देर से आने पर, या वादा करके पूरा न करने पर कभी भी हाय-तौबा मत मचाइए, और न जासूसी करके यह पता लगाने की कोशिश कीजिए कि शौहर ने वह वक़्त कहाँ बिताया। शौहर को अपना क़ैदी मत समझिये बल्कि कुछ वक़्त ख़ासतौर से उसे अपनी मर्ज़ी से बिताने का मौक़ा भी दीजिए।

– अपनी हदों को सामने रखते हुए शौहर के दोस्तों और रिश्तेदारों की खुले दिल के साथ ख़िदमत कीजिए। वक़्त और बेवक़्त आने वाले मेहमानों के लिए चाय-पानी का इन्तेज़ाम करते हुए उन्हें यह महसूस न होने दीजिए कि आपको बहुत बुरा लग रहा है।

– शौहर की अच्छाईयों की तारीफ़ कीजिए और उसका शुक्रिया अदा करती रहिये क्योंकि शौहर ही बीवी का सबसे अच्छा साथी होता है और वह अपनी बीवी को ख़ुश करने के लिए अपना माल और वक़्त सब कुछ ख़र्च करता है, बीवी की ज़रूरतों को पूरा करता है और उसे आराम पहुँचा कर दिली ख़ुशी महसूस करता है।

– सलीक़े और सफ़ाई के साथ सजा-सजाया घर, बनाव-सिंगार की हुई बीवी की पाकीज़ा मुस्कुराहट घरेलू ज़िन्दगी में प्यार और मोहब्बत का एहसास पैदा कर देती है। साथ ही औरत के लिए अपनी आख़िरत को संवारने और ख़ुदा को ख़ुश करने का ज़रिया भी होती है।

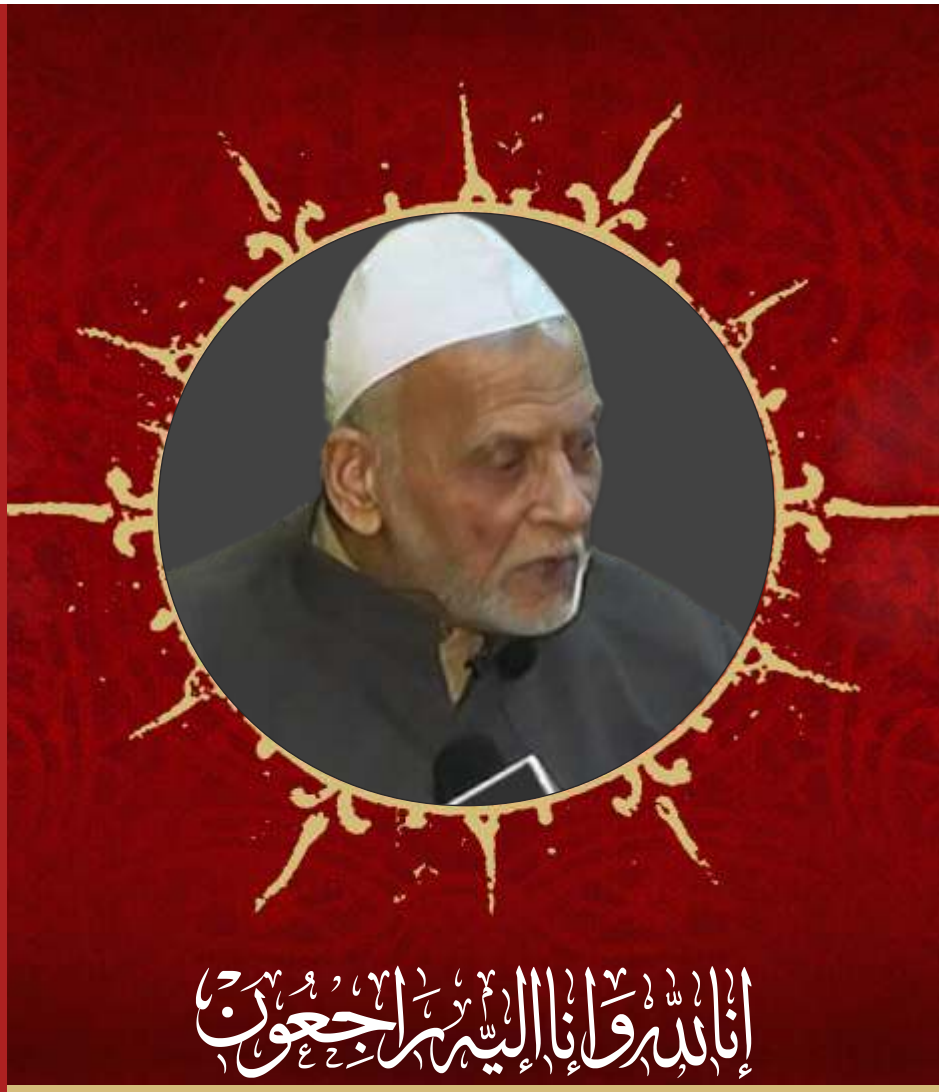

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

साल 2019-2020, एक-एक करके न जाने कितनी हस्तियाँ हमारे बीच से उठ गईं।

अब 31 जूलाई 2020 को जुमे के दिन हज़रत हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सै. इब्ने हैदर साहब क़िब्ला ताबा सराह भी अपने ख़ालिक़ व मालिक के पास चले गए।

मरहूम व मग़फ़ूर मौलाना बड़े मिलनसार, बड़े अच्छे अख़लाक़ वाले, मुस्कुरा-मुस्कुरा कर बात करने वाले और हर एक के साथ हमदर्दी करने वाले थे।

अरबी लिट्रेचर, उर्दू लिट्रेचर और इस्लामी फ़िलास्फ़ी पर आपकी बड़ी मज़बूत पकड़ थी।

आपकी पहचान आप की ज़ाकिरी के अंदाज़ की वजह से बहुत ज़्यादा थी। आपकी ज़ाकिरी का अंदाज़ सबसे अलग और बड़ा ही दिल मोह लेने वाला था। बड़ी ही मीठी ज़बान में ज़ाकिरी करते थे।

आपकी लगभग सारी उम्र लखनऊ के मशहूर जामिया-ए-नाज़मिया में अरबी लिट्रेचर पढ़ाते हुए गुज़री थी।

अल्लाह तआला मरहूम व मग़फ़ूर मौलाना पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाए और दरजात बुलंद फ़रमाए!

يا زين العابدين

इमाम सज्जाद अ० की 4 हदीसें

पहली हदीस

''ऐ आदम के बेटे! तुम हमेशा सआदत (कामयाबी) की ज़िन्दगी बसर करोगे लेकिन शर्त यह है कि तुम्हारे अन्दर कोई नसीहत करने वाला मौजूद हो और तुम्हारा हिसाब करता रहे, ख़ुदा का डर तुम्हारा तरीक़ा बन जाए और एहतियात तुम्हारा ओढ़ना-बिछौना हो जाए।''

वह नसीहत जो इन्सान के अन्दर से उभरती है और उसके ज़मीर से उठती है वही सबसे अच्छी नसीहत होती है क्योंकि हर आदमी अपने हालात और अपनी अच्छाईयों या बुराईयों के बारे में अच्छी तरह से जानता है।

इसलिए हर इन्सान की कोशिश होना चाहिए कि वह बराबर अपना हिसाब करता रहे।

अगर दूसरे हमारी पूछताछ करें तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम भी अपना हिसाब न करें। मुहासबा यानी अपना हिसाब-किताब, जो फ़्युचर में होने वाली ग़लतियों से रोकता है।

इस हदीस में डर का मतलब यह है कि इन्सान ख़ुदा के अज़ाब और अपने बुरे कैरेक्टर से डरे, न कि दूसरे लोगों या दुनियावी ताक़तों से डरता रहे।

इस हदीस में एहतियात का मतलब यह है कि जब भी इन्सान कोई काम करे या ज़िन्दगी के किसी भी मैदान में क़दम रखे तो हर क़दम फूँक-फूँक कर, एहतियात के साथ और बचते हुए उठाए। दीन में इसी को तक़वा कहते हैं।

दूसरी हदीस

''कितने ही ऐसे लोग हैं जो अपनी तारीफ़ सुनकर अक़्ल खो बैठते हैं और कितने ही ऐसे लोग हैं कि जब ख़ुदा ने उनके गुनाहों पर पर्दा डाल दिया तो वह घमण्डी हो गये और कितने ही ऐसे ग़ाफ़िल हैं जो ख़ुदा के एहसान की वजह से ग़फ़लत का शिकार हो गये।''

हम में से न जाने कितने लोग ऐसे हैं जो लोगों की तारीफ़ और चापलूसी के धोखे में आ जाते हैं।

इन्सान को दूसरे लोगों की बातों के चक्कर में नहीं आना चाहिए और शैतान के बहानों की वजह से अपने बारे में सही फ़ैसले से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए।

जिन लोगों के पास कोई बड़ी ज़िम्मेदारी होती है उनके लिए इस बात की तरफ़ ध्यान देना दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा ज़रूरी होता है।

इन्सान को इस बात पर भी घमण्ड नहीं होना चाहिए कि ख़ुदा ने उसके गुनाहों पर पर्दा डाल दिया है और उसकी बुराईयां हमेशा छुपी रहेंगी।

हो सकता है कि ख़ुदा इसी दुनिया में उन ऐबों व बुराईयों से पर्दा हटा दे और अगर उसने अपने करम से काम लिया और इस दुनिया में दूसरे इन्सानों के सामने हमारे राज़ न खोले तो क़यामत के दिन अपने आप ही हमारे राज़ सब के

सामने आ जाऐगे क्योंकि वह ऐ ऐसा दिन है जब हर छुपी हुई चीज़ सामने आ जाएगी।

इसी लिए मासूमीन[अ०] ख़ुदा से दुआ करते थेः ख़ुदाया! क़यामत के दिन हमें सबके सामने ज़लील (बेइज़्ज़त) न करना।

इसी तरह न जाने कितने ही ऐसे लोग भी हैं जो ख़ुदा की दी हुई नेमतों की वजह से सब कुछ भूल जाते हैं।

इसलिए हमें हर पल होशियार रहना चाहिए कि हम दूसरे लोगों की तारीफ़ों, ख़ुदा की तरफ़ से गुनाहों के छुपाने की वजह से और उसकी दी हुई नेमतों की वजह से ग़फ़लत का शिकार न हों।

तीसरी हदीस

''एक आदमी ने इमाम सज्जाद[अ०] से कहाः मैं ख़ुदा के लिए आपसे बहुत ज़्यादा मोहब्बत करता हूँ।

इमाम[अ०] ने उसकी बात सुनकर कुछ देर अपने सर को झुकाए रखा और फिर उससे कहाः ऐ ख़ुदा! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि मुझे तेरी वजह से चाहा जाए और तू मुझ से नाराज़ रहे।

फिर उस आदमी से कहाः मैं भी तुम्हें उसी ख़ुदा के लिए चाहता हूँ जिसके लिए तुम मुझ से मोहब्बत करते हो।''

इस हदीस में जिस ख़ास बात की तरफ़ इशारा किया गया है और जो ज़िन्दगी जीने के लिए एक फ़ार्मूला भी है वह यह है कि इन्सान उस ख़तरे की तरफ़ ध्यान देता रहे जो ऐसे मौक़े (यानी ख़ुदा के लिए लोगों का महबूब बनने) पर पेश आ सकता है।

इसी लिए जब उस आदमी ने इमाम से कहा कि मैं ख़ुदा के लिए आपसे मोहब्बत करता हूँ तो आप ने उस से यह नहीं कहा किः बहुत-बहुत शुक्रिया या मैं इस बात पर ख़ुदा का शुक्र अदा करता हूँ बल्कि दुआ की कि ऐ ख़ुदा! इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि लोग तेरी वजह से मुझ से मोहब्बत करें और तू मुझ से नाराज़ हो।

हमारे लिए यह एक बहुत बड़ा ख़तरा है कि लोग हमारे बारे में यह सोचें कि हम बहुत ख़ुलूस के साथ ख़ुदा के लिए काम कर रहे हैं जबकि हक़ीक़त में ऐसा न हो। हमारा ज़ाहिर कुछ हो और बातिन कुछ और हो यानी कहीं ऐसा न हो कि हम अपने कामों की वजह से ख़ुदा को नाराज़ कर बैठे हों।

चौथी हदीस

''ख़ुदा की मारेफ़त के बाद ख़ुदा को कोई भी चीज़ पेट के पाकीज़ा होने और पाकदामनी से ज़्यादा पसन्द नहीं है। ख़ुदा को सबसे ज़्यादा यह चीज़ पसन्द है कि उस से माँगा जाए और दुआ की जाए।''

यहाँ इस बात की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है कि इस हदीस में इमाम ने ख़ुदा की मारेफ़त के बाद सबसे ख़ास चीज़ 'पेट का पाक होना और पाकदामन होना' बताया है और दूसरी किसी वाजिब चीज़ या किसी इबादत जैसे नमाज़ वग़ैरा का ज़िक्र नहीं किया।

इसकी वजह ये है कि पाकदामन न होना अल्लाह के रास्ते पर आगे बढ़ने में एक रुकावट है और इसका असर बहुत ज़्यादा होता है बिल्कुल ऐसे ही जैसे कोई ताक़त पहुंचाने वाल चीज़ों का इस्तेमाल कर रहा हो लेकिन साथ ही साथ कोई ज़हर या वायरस वाली चीज़ भी इस्तेमाल कर रहा हो, ऐसे में ताक़त देने वाली चीज़ उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुँचाएगी।

रूहानी मामलों में भी इसी तरह है कि अगर कोई बहुत ज़्यादा इबादत करे लेकिन साथ ही अपनी रूह की तरफ़ गुनाहों के जर्म्स भी भेजता रहे तो उसकी सारी इबादतें बेकार हैं।

लेकिन अगर वह अपने दिल के आईने को गुनाह की गन्दगी से काला न करे तो ख़ुदाई फ़ितरत उसे कमाल और परफ़ेक्शन की तरफ़ ले जाएगी।

इसलिए गुनाह न करना इबादत करने से ज़्यादा बड़ा काम है। इसी लिए शैतान इन्सान को इबादत छोड़ने से ज़्यादा गुनाह करने पर उभारता है क्योंकि जब गुनाह उसे घेर लेंगे तो उसकी इबादतें उसे ख़ुदा से क़रीब कर ही नहीं सकतीं।

ख़ुदा के यहाँ सबसे बड़ा काम इन्हीं दो गुनाहों को छोड़ना है। एक पेट का गुनाह जो माल, दौलत इकट्ठा करने और लालच की वजह बनता है और दूसरा शहवत का गुनाह।

सूरए फ़ील

आयतुल्लाह
नासिर मकारिम शीराज़ी

यह सूरह मक्के में नाज़िल हुआ था और इसकी 5 आयतें हैं।

इस सूरे में क्या है ?

इस सूरे के नाम से ही पता चल रहा है कि इसमें उस वाक़िए की तरफ़ इशारा है जो उसी साल पेश आया था जिस साल अल्लाह के रसूल[स०] की विलादत हुई थी। यमन का गवर्नर हाथियों का एक लश्कर लेकर ख़ान-ए-काबा को ढाने के लिए आया था लेकिन ख़ुदा ने एक ख़ास प्लानिंग से अपने घर को बचा लिया था।

यह वाक़िआ सुनाने का मक़सद यह है कि घमण्डी और ताक़त के नशे में चूर रहने वाले लोग यह जान लें कि ख़ुदा के सामने उनकी कोई हैसियत नहीं है। जो ख़ुदा छोटे-छोटे पत्थरों के ज़रिये हाथियों के इतने बड़े लश्कर को ख़त्म कर सकता है वह हर ज़माने के घमंडियों और ख़ुदा से टक्कर लेने वालों को भी भसम कर सकता है।

सूरए फ़ील

इस सूरे के बारे में इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैंः ''जो भी सूरए फ़ील को अपनी वाजिब नमाज़ों में पढ़ेगा क़यामत के दिन हर पहाड़, हर ज़मीन और हर पत्थर उसके बारे में गवाही देगा कि यह नमाज़ी है और उन गवाहियों के जवाब में यह आवाज़ आएगीः तुम ने मेरे बन्दे के बारे में सच कहा। मैं अपने बन्दे के बारे में तुम्हारी गवाही क़ुबूल करता हूँ। इसका हिसाब किये बग़ैर इसे जन्नत में ले जाओ। मैं इस से मोहब्बत करता हूँ और इसके आमाल भी मुझे अच्छे लगते हैं।''

यह बात भी साफ़ है कि यह फ़ज़ीलत और यह सवाब उसके लिए है जो यह आयतें पढ़ने के बाद हर तरह के घमण्ड को छोड़ दे और ख़ुदा की मर्ज़ी के पीछे-पीछे चल पड़े।

हाथियों की फ़ौज

क़ुरआन की तफ़सीर और हिस्ट्री लिखने वालों ने यह वाक़िआ कई तरह से लिखा है। हम यहाँ सीरत इब्ने हिशाम, बिहारुल अनवार और मजमउल बयान से ख़ुलासे के तौर पर इसे पेश करेंगे।

यमन के बादशाह ज़ुनुवास ने नजरान के ईसाईयों को कड़ी सज़ाएं दी थीं ताकि वह ईसाई मज़हब छोड़ दें। क़ुरआन ने इस वाक़िए को सूरए बुरूज में ''अस्हाबे उख़दूद'' के नाम से बयान किया है।

एक आदमी इस ज़ुल्म से बच कर रोम चला गया था और वहाँ के बादशाह क़ैसर को सारी बात बता दी थी। क़ैसर ने इथोपिया के बादशाह ''नजाशी'' को एक ख़त लिखा कर कहा कि ज़ुनुवास से ईसाईयों के क़त्ल का बदला ले लो।

नजाशी ने सत्तर हज़ार लागों का एक बड़ा लश्कर यमन पर चढ़ाई के लिए भेज दिया जिसमें कई बड़े कमाण्डर थे, उनमें से एक ''अबरहा'' भी था।

ज़ुनुवास की इस जंग में हार हो गई थी और यमन का बादशाह ''अरयात'' को बना दिया गया था। कुछ टाइम

के बाद अबरहा ने अरयात के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी थी और उसे मार कर ख़ुद यमन का बादशाह बन बैठा था।

जब नजाशी को इस बात की ख़बर मिली तो उसे बड़ा ग़ुस्सा आया और उसने अबरहा को सबक़ सिखाने का फ़ैसला कर लिया लेकिन अबरहा ने अपने सर के बाल काटे और उसमें यमन की कुछ मिट्टी मिला कर नजाशी के पास भेज दी। इस तरह नजाशी के सामने पूरी तरह से सरेन्डर होने और उसके साथ वफ़ादारी का एलान कर दिया।

नजाशी ने भी उसे माफ़ कर दिया और उसी को यमन का गवनर्र बना रहने रहने दिया।

अबरहा ने अपनी वफ़ादारी साबित करने के लिए यमन में एक चर्च बनवाया, एक ऐसा चर्च कि उसके जैसा चर्च उस वक़्त की पूरी दुनिया में कहीं भी नहीं था। उसने सोचा इस चर्च को एक सेन्टर में बदल दिया जाए। इसलिए उसने अरब के लोगों को इस चर्च की इबादत करने और काबे के बजाए इसे दुनिया का सबसे बड़ा सेन्टर बनाने के लिए कहा।

इस काम के लिए उसने बहुत से लोगों को अरब की अलग-अलग जगहों पर भेजा था ताकि वह लोग उन जगहों पर जाकर दूसरे लोगों को इस नए चर्च की तरफ़ मोड़ सकें लेकिन लोगों ने यह बात नहीं मानी बल्कि कुछ लोगों ने एक रात उस चर्च को ही आग लगा दी।

इस बात पर अबरहा को बहुत ग़ुस्सा आया और उसने काबे को पूरी तरह से ख़त्म करने और ढाने का प्लान बनाया। उसने एक बड़ा लश्कर तैयार किया और बहुत से हाथियों के साथ मक्के की तरफ़ चल पड़ा।

मक्के के पास पहुँच कर उसने अपने बहुत से सिपाहियों को मक्के की तरफ़ भेज दिया ताकि वहाँ पहुँच कर लूटमार करें, लोगों के जानवरों को पकड़ कर लाएं और उनके अन्दर डर पैदा कर दें। उसके सिपाहियों ने हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के 200 ऊँट अपने क़ब्ज़े में ले लिये थे।

फिर अबरहा ने एक सिपाही को मक्के भेजा और उस से कहा कि मक्के के सरदार को मेरे पास लेकर आओ। वह आदमी मक्के गया और उसने मक्के के सरदार के बारे में पूछा। उसे बताया गया कि अब्दुल मुत्तलिब यहाँ के सरदार हैं। वह हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के पास आया और उन से कहा कि आपको मेरे साथ अबरहा के पास चलना होगा। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब जैसे ही अबरहा के पास आए, अबरहा उन्हें देखकर खड़ा हो गया। अबरहा को अरबी नहीं आती थी। इसलिए उसने अपने ट्रॉन्सलेटर से कहाः इन से पूछो कि यह क्या चाहते हैं ?

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दियाः मेरे 200 ऊँट तुम्हारे सिपाहियों ने अपने क़ब्ज़े में ले लिये हैं, वह मुझे लौटा दो।

अबरहा ने कहाः तुम्हें देखते ही तुम्हारे लिए मेरे दिल में जगह बन गई थी लेकिन तुम्हारी बात सुनने के बाद तुम मेरी नज़रों में छोटे हो गये हो। मैं समझ रहा था कि तुम काबे के बारे में मुझ से कोई बात करोगे जो तुम्हारे बाप-दादा के दीन-ईमान की निशानी और तुम्हारी इज़्ज़त है। लेकिन तुम ने उसके बारे में कोई बात नहीं की, तुम्हें सिर्फ़ अपने ऊँटों की परवाह है।

अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दियाः ''मैं ऊँटों का मालिक हूँ इसलिए मैंने अपने ऊँटों की डिमाण्ड की है। काबे का मालिक कोई और है, वही उसे बचाएगा।'' अबरहा यह सुनकर घबरा गया और सोचने पर मजबूर हो गया।

इसके बाद हज़रत अब्दुल मुत्तलिब वापस आ गए और आने के बाद लोगों से कहा कि फ़ौरन मक्के के पहाड़ों की तरफ़ चले जाओ और ख़ुद ख़ाना काबा के पास आकर ख़ुदा से दुआ मांगने लगे।

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने दुआ कीः ''ख़ुदाया! हर एक अपने घर की हिफ़ाज़त करता है। तू भी अपने घर की हिफ़ाज़त फ़रमा। ख़ुदाया! कहीं ऐसा न हो कि वह कामयाब हो जाएं और हम पर चढ़ाई कर दें।''

इसके बाद अब्दुल मुत्तलिब एक पहाड़ी के पास आ गए और अपने क़बीले के साथ वहीं ठहर गए। उन्होंने अपने एक बेटे को ''अबू क़ुबैस'' नाम के पहाड़ के ऊपर भेज दिया था ताकि वह वहाँ से देखता रहे कि क्या-क्या हो रहा है।

उनके बेटे ने बतायाः कुछ काले बादल लाल समन्दर की तरफ़ से हमारी तरफ़ आते हुए दिखाई दे रहे हैं। अब्दुल मुत्तलिब यह सुनकर ख़ुश हुए और उन्होंने मक्के वालों से कहा कि सब लोग अपने- अपने घरों को चले जाओ क्योंकि ख़ुदा की मदद आ चुकी है।

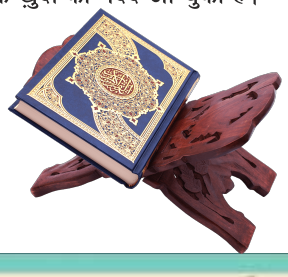

दूसरी तरफ़ अबरहा अपने हाथी ''महमूद'' पर बैठकर मक्के के पहाड़ों की तरफ़ से नीचे आ गया था और ख़ान-ए-काबा की तरफ़ बढ़ने लगा था लेकिन हाथी ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। ख़ूब कोशिश की गई मगर हाथी टस से मस नहीं हुआ। लेकिन जैसे ही उसे यमन की तरफ़ मोड़ा गया वह तेज़ी से भागने लगा। यह देख कर अबरहा हैरान रह गया।

उसी वक़्त आसमान में हज़ारों परिन्दे अपनी चोंचों में छोटे-छोटे पत्थर लिये हुए ख़ान-ए-काबा के ऊपर से होते हुए अबरहा के लश्कर के ऊपर आए और उन्होंने मुँह में और पंजों में रखे हुए पत्थर बरसाना शुरु कर दिये। जिसे भी वह पत्थर लगता था वह वहीं ढेर हो जाता था। कुछ लोगों ने यहाँ तक भी लिखा है कि पत्थर गोलियों की तरह जिस्म के एक हिस्से पर लगते थे और दूसरी तरफ़ से बाहर निकल जाते थे।

अबरहा के जिस्म पर भी कई पत्थर गिरे थे और वह बुरी तरह ज़ख़्मी हो गया था। उसे यमन लौटाया गया जहाँ कुछ ही टाइम बाद वह दुनिया से चल बसा था।

यही वह साल था जिस साल अल्लाह के रसूल[सo] की विलादत भी हुई थी और दुनिया उनके नूर से चमक उठी थी। इस लिए बहुत से उलमा का मानना है कि इस वाक़िए और अल्लाह के रसूल[सo] की विलादत में एक गहरा रिश्ता है। यह वाक़िआ इतना बड़ा था कि इस साल को ''आमुल फ़ील'' यानी हाथियों वाला साल कहा गया और फिर इसी नाम से अरबी कैलेन्डर भी शुरू हुआ।

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर रहमाननिर रहीम

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।

आयत नम्बर-1

الم تر كيف فعل ربك باصحاب الفيل

क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया ?

आयत नम्बर-2

الم يجعل كيدهم فى تضليل

क्या ख़ुदा ने उन्हें उनके प्लान में नाकाम नहीं किया ?

वह लोग ख़ान-ए-काबा को ढाना चाहते थे ताकि लोगों के दिलों को उस चर्च की तरफ़ मोड़ दें जो उन्होंने यमन में बनाया था लेकिन वह न सिर्फ़ अपने मक़सद में कामयाब नहीं हुए बल्कि इस वाक़िए के बाद मक्के और काबे की अहमियत लोगों की नज़रों में और बढ़ गई।

आयत नम्बर-3

و ارسل عليهم طيرا ابابيل

और उनकी तरफ़ अबाबील जैसे छोटे परिन्दों को भेजा।

आयत नम्बर-4

ترميهم بحجاره من سجيل

जिन्होंने छोटे-छोटे पत्थरों से उन पर हमला कर दिया था।

यह छोटे पत्थर जिसके ऊपर भी गिरते थे उसे भसम कर देते थे।

आयत नम्बर-5

فجعلهم كعصف مأكول

इस तरह ख़ुदा ने उन्हें चबाए हुए भूसे की तरह बना दिया था।

यह सूरह अपनी ताक़त पर अकड़ने और ख़ुदा के मुक़ाबले में आने वालों के लिए एक तरह का मैसेज है कि वह देख लें कि ख़ुदा से टक्कर लेने का अंजाम क्या होता है।

आज भी ख़ुदा वही ख़ुदा है और उसकी ताक़त भी वही ताक़त है, इसलिए जो अंजाम कल के ज़ालिमों का हुआ था वही आज के ज़ालिमों का भी हो सकता है।

● ● ●

क़ुरआन पढ़िए

अपने-अपने घरों में क़ुरआन की ख़ुश्बू फैला दीजिए। क़ुरआन पढ़िए और ख़ूब पढ़िए। क़ुरआन में ग़ौर कीजिए। दुश्मन नहीं चाहता कि मुसलमान क़ुरआन को क़ानून की किताब की तरह अपने हाथों में ले लें क्योंकि क़ुरआन ने हमें हमारी सारी ज़िम्मेदारियाँ समझा दी हैं...।

हमें चाहिए कि हम दिन बदिन क़ुरआन के साथ अपने रिश्ते को मज़बूत से मज़बूत करते जाएं। अपने घरों में क़ुरआन की तिलावत किया कीजिए। अगर आपको कोई काम न हो और थोड़ा सा भी वक़्त मिल जाए तो उस थोड़े से वक़्त में भी क़ुरआन से जुड़ जाइए।

रोज़ाना थोड़ा सा क़ुरआन ज़रूर पढ़िए और उसे समझने की कोशिश कीजिए।

प्रॉब्लम्स का साइंटिफ़िक हल ढूँढिए

■ प्रोफ़ेसर मोहम्मद अक़ील ख़ान

केस स्टडी

''मिरगी एक ऐसी बीमारी है जिसमें बीमार पर जब दौरा पड़ता है तो उसके हाथ और पाँव मुड़ने लगते हैं और वह ज़मीन पर गिर कर बुरी तरह से कांपने लगता है। यह हालत कुछ देर तक बाक़ी रहती है फिर जिस्म नार्मल पोज़ीशन पर आ जाता है।

आज से सैकड़ों साल पहले इस बीमारी के बारे में एक थ्योरी बताई जाती थी। वह यह थी कि इस बीमारी की वजह यह है कि बीमार के अन्दर एक बुरी रूह आ जाती है। यह बुरी रूह बीमार के दिमाग़ में घुस कर उसके हाथ-पाँव मोड़ देती है। इसका इलाज यह था कि बीमार के सर में एक कील ठोंकी जाती थी ताकि उस बुरी रूह को बाहर आने का रास्ता मिल सके। इस तरह बुरी रूह निकल जाती थी और बीमार को सुकून मिल जाता था। लेकिन बुरी रूह के निकलने के साथ ही बीमार की अपनी रूह भी निकल जाती थी और यूँ उसे अच्छी और बुरी दोनों रूहों से मुक्ति मिल जाया करती थी।

बाद में इस नज़रिये को मेडिकल साइंस ने ग़लत बताया। जब रिसर्च की गई तो पता चला कि मिरगी की असली वजह कुछ और है।

असल में हमारे दिमाग़ को ख़ून सप्लाई करने वाली एक ख़ास वेन होती है। मिरगी की बीमारी में वक़्ती तौर पर ख़ून की सप्लाई रुक जाती है जिसकी वजह से उसके हाथ-पाँव मुड़ने लगते हैं। ख़ून की इस सप्लाई को बैलेंस करने के लिए कई दवाईयाँ बनाई गयीं और आज मिरगी का इलाज साइंस ने ढूँढ लिया है।

डिटेल

हमें जब भी किसी प्रॉब्लम का सामना होता है तो हम उसे हल करने की कोशिश करते हैं। लेकिन हम में से बहुत सारे लोग प्रॉब्लम को हल नहीं कर पाते। इसकी बुनियादी वजह यह होती है कि हम उस प्राब्लम को सही तरीक़े से हल करने की कोशिश नहीं करते। जब तक मामले को साइंटिफ़िक तरीक़े से हल नहीं किया जाएगा, वह मामला जूँ का तूँ ही रहेगा। जैसे एक सब्ज़ी बेचने वाला यह देखता है कि उसके बराबर वाली दुकान पर हर वक़्त भीड़ रहती है जबकि उसकी दुकान पर बहुत कम लोग आते हैं। इस प्रॉब्लम को हल करने का एक तरीक़ा तो यह है कि वह कुछ सोचे-समझे बिना इस सिचुएशन से निपटने के लिए हाथ-पाँव मारना शुरु कर दे। किसी पीर-फ़क़ीर या दुआ-तावीज़ करने वाले के पास चला जाए, अगर बत्तियाँ जलाए और बरकत के लिए क़ुरआनी आयतें लटकाए। ज़ाहिर है कि इस से कुछ नहीं होने वाला बल्कि परेशानी और बढ़ेगी। दूसरा ऑप्शन यह है कि वह इस मामले को पहले ठीक से समझे और इसको हल करने के लिए कुछ स्टेप उठाए:

स्टेप नम्बर-1: प्रॉब्लम को समझे।

स्टेप नम्बर-2: प्रॉब्लम की वजह जानने और समझने की कोशिश करे।

स्टेप नम्बर-3: प्रॉब्लम का जो भी हल हो सकता हो उसे ढूँढने की कोशिश करे।

स्टेप नम्बर-4: जितने हल उसके दिमाग़ में आएं उनमें से सबसे अच्छे हल को अपनाए।

स्टेप नम्बर-5: जो हल उसे सही समझ में आया है उस पर डट जाने का फ़ैसला करे और उस पर काम शुरु कर दे।

सबसे पहला काम यह है कि जो भी प्रॉब्लम है उसे लिख लिया जाए। एक

अच्छी तरह से लिखी हुई प्रॉब्लम लिखने के बाद आधा हल ख़ुद ही समझा देती है।

जैसे वह सब्ज़ी कम बिकने की प्रॉब्लम को इस तरह समझ सकता है:

तरीक़ा नम्बर-1: मेरा धंधा बर्बाद हो रहा है।

अगर इस बात को देखा जाए तो यह प्रॉब्लम को समझने का सही तरीक़ा नहीं है। इस से यह समझ में नहीं आ रहा है कि बर्बादी किस तरह की है और कारोबार कब से बर्बाद हो रहा है।

तरीक़ा नम्बर-2: पिछले छः महीनों से मेरी सब्ज़ियों की बिक्री 30% कम हो रही है।

यह प्रॉब्लम को समझने और समझाने का सही तरीक़ा है जो प्राब्लम के हर पहलू पर बात कर रहा है।

दूसरा काम यह है कि वह इस बिक्री में कमी की वजह का पता लगाने की कोशिश करे। वजह जानने से ज़्यादा यह जानना ज़रूरी है कि रियालिटी क्या है।

कोलम्बिया युनिवर्सिटी के एक प्रोफ़ेसर ने कहा था:

''दुनिया की आधी से ज़्यादा परेशानियों की असली वजह यह है कि लोग सोचे-समझे बिना फ़ैसला करना शुरु कर देते हैं जबकि उनके पास वह जानकारियां नहीं होतीं जिनको ध्यान में रखकर उन्हें फ़ैसला करना होता है।''

उस सब्ज़ी बेचने वाले की बिक्री में कमी की कई वजहें हो सकती हैं। जैसे सब्ज़ी की ख़राब क्वालिटी, दुकान की लोकेशन, क़ीमत में फ़र्क़, कस्टमर से उसका बर्ताव वग़ैरा। सही वजह जानने के लिए रियालिटी को इंसाफ़ के साथ समझना होगा। हो सकता है कि वह यह सोचने लगे कि दूसरा दुकानदार इसलिए कामयाब है क्योंकि वह चापलूस है और वह ग्राहकों को अपनी बातों से घेर लेता है।

रियालिटी को इंसाफ़ के साथ समझने का एक तरीक़ा यह भी है कि किसी दूसरे आदमी से भी मदद ली जाए। अब अगर यह दुकानदार किसी तीसरे आदमी को डमी ग्राहक बनाकर दो तीन बार दूसरे दुकानदार के पास भेज दे तो पता चल जाएगा कि दूसरा वाला दुकानदार इसलिए ज़्यादा कामयाब है कि वह ग्राहकों से अच्छे अख़्लाक़ से पेश आता है और वह कस्टमर्स को थोड़ी ज़्यादा सब्ज़ी भी दे देता है।

तीसरा स्टेप यह है कि प्रॉब्लम का जो भी हल हो उसे ढूँढने की कोशिश करे जैसे हमारी मिसाल के लिए यह हल निकाले जा सकते हैं:

एक हल तो यह है कि वह अपना अख़्लाक़ और बर्ताव अच्छा बनाकर कस्टमर का ध्यान अपनी तरफ़ मोड़े। इसके साथ ही साथ वह यह भी कर सकता है कि कुछ एक्स्ट्रा सब्ज़ी भी ग्राहक को देने लगे।

दूसरा हल यह है कि वह शुरु में क़ीमतें कम कर दे ताकि कस्टमर्स उसकी तरफ़ आने लगें।

तीसरा हल यह है कि वह ख़ुद दुकान पर न बैठे बल्कि किसी अच्छी तरह से बात करने वाले और अच्छे बर्ताव वाले सेल्समैन को दुकान पर बिठा दे।

चौथा स्टेप यह है कि जितने हल भी हो सकते हैं उन सब को परखा जाए और उनकी अच्छाईयाँ व बुराईयाँ देखकर जो सबसे अच्छा हल लगे उसे चुन लिया जाए।

अगर दुकानदार पहला हल चुनता है यानी अपना बर्ताव अच्छा करके सेल बढ़ाने की कोशिश करता है तो यह एक लम्बा प्रॉसेस है क्योंकि लोगों को उसके अख़्लाक़ व बर्ताव के अच्छा होने के बारे में जानने में बहुत टाइम लगेगा।

दूसरा हल क़ीमतों में कमी वाला है। यह एक शार्ट टर्म और जल्दी नतीजा देने वाला हल है लेकिन इस से प्रॉफ़िट और मॉर्जिन में कमी आ सकती है। वैसे कुछ टाइम के बाद क़ीमतों को दोबारा उसी पहले वाले लेवेल पर वापस लाया जा सकता है।

तीसरा हल भी आसान है कि अपने आप को दुकान से हटाकर किसी अच्छे सेल्समैन को दुकान पर बिठाया जाए। इस से लोगों पर अच्छा इम्पेक्ट पड़ेगा।

इस तरह अब वह हल नम्बर-2 और 3 एक साथ अपनाने का फ़ैसला कर लेता है।

पाँचवाँ और आख़िरी स्टेप यह है कि इस हल पर अमल करने के लिए एक प्रोग्राम बनाया जाए। इसके लिए उसे यह फ़ैसला करना होगा है कि नये सेल्समैन को वह अगले हफ़्ते से अपॉइन्ट कर लेगा और अगले ही हफ़्ते से वह क़ीमत में 10% कमी कर देगा।

एसाइनमेन्ट

1- अपनी ज़िन्दगी की दो बड़ी प्रॉब्लम्स लिखिए और उनके हल के लिए इन पाँचों स्टेप्स पर अमल कीजिए।

2- ऊपर समझाई गई केस स्टडी में पुराने लोगों से मिरगी के इलाज में क्या ग़लती हो रही थी ?उन्हें इस मामले का हल किस तरह से निकालना चाहिए था ?

पाँचों स्टेप्स को अप्लाई करते हुए जवाब दीजिए।

3- आप अपने बच्चों की अच्छी एजुकेशन और उनके ब्राइट फ़्युचर के बारे में फ़ैसला करना चाहती हैं। इन पाँचों स्टेप्स को अपलाई करते हुए हल तलाश कीजिए।

4- आपके घर में या आपके आसपास किसी के घर कोई लड़की या लड़का हमेशा एग्ज़ाम में कम नम्बर लाता है।

इन पाँचों स्टेप्स को सामने रखकर वह किस तरह अपनी इस प्रॉब्लम हल निकाल सकता है ?

■ आयतुल्लाह जवादी आमुली

इमाम मूसा काज़िम अ०
की ज़िंदगी के कुछ महकते फूल

हर चीज़ में नसीहत छुपी हुई है

अहलेबैत अ० ने हमें हर चीज़ पर ग़ौर करना और सोचना-समझना सिखाया है। साथ ही हमें यह भी बताया है कि ग़ौर किस तरह करना चाहिए जैसे अगर इन्सान किसी खण्डर या टूटे-फूटे मकान में पहुँच जाए तो उस मकान के बारे में सोचे और यह सवाल करेः

''तेरे अंदर रहने वाले और तुझे बनाने वाले कहाँ चले गये ?

ग़ौर व फ़िक्र करना इन्सान को हमेशा अपनी हक़ीक़त की तरफ़ तवज्जो दिलाता है। इस लिए इन्सान के सामने जो भी चीज़ आए उसे उसमें ग़ौर व फ़िक्र करना चाहिए और उस से नसीहत लेना चाहिए।

एक बार इमाम काज़िम अ० ने हारून रशीद से फ़रमाया थाः

''तुम जो कुछ भी देखते हो उसमें तुम्हारे लिए कोई न कोई नसीहत ज़रूर होती है।''

एक पल किसी चीज़ के बारे में सोचने का असर यह भी हो सकता है कि इन्सान ग़फ़लत से जाग जाए और होशियार हो जाए।

काम और मेहनत पर इस्लाम का ज़ोर

इस्लाम ने इस बात पर भी बहुत ज़ोर दिया है कि इन्सान ज़िन्दगी के किसी पल में भी काम व कोशिश से हाथ न रोके बल्कि इन्सान ज़िन्दगी की हर स्टेज में मेहनत और कोशिश करता रहे जैसे अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काम करे और हलाल रिज़्क़ कमाए ताकि इस मेहनत व कोशिश के नतीजे में लोग अपनी निजी ज़िन्दगी में भी ख़ुश हाल रहें और समाजी ज़िन्दगी में भी बड़े मक़सद को पा सकें।

इसलिए इन्सान की साँसें जब तक चल रही हैं उसे काम करते रहना चाहिए। समाज में हर आदमी को अपनी-अपनी स्किल और कैपेसिटी के हिसाब से काम और मेहनत करते रहना चाहिए।

एक किसान खेती-बाड़ी करके ज़मीन से उगने वाली चीज़ें उगाए, एक इण्डस्ट्री में काम करने वाला समाज की उन ज़रूरतों को पूरा करे जो इण्डस्ट्री के ज़रिये ही पूरी की जा सकती हैं, एक टीचर बच्चों को पढ़ा कर और एक स्कॉलर अपने इल्म और रिसर्च के ज़रिये अपनी हिम्मत और ताक़त के हिसाब से जितना और जैसा उस से हो सकता हो, मेहनत और कोशिश करके समाज में अपना भरपूर रोल निभा सकता है।

एक तरफ़ जहाँ लोगों को काम और मेहनत करने का हुक्म दिया गया है, वहीं दूसरी तरफ़ उन्हें सुस्ती और निकम्मेपन से भी रोका गया है, क्योंकि एक बेकार और निकम्मा इन्सान समाज के अन्दर जहाँ अपनी और अपनी फ़ैमिली की ज़िन्दगी या आसपास के माहौल पर बुरा असर डालता है, वहीं वह ख़ुदा के अज़ाब का हक़दार भी बन जाता है जैसा कि इमाम काज़िम अ० फ़रमाते हैंः

''ख़ुदा निकम्मे और बेकार इन्सान पर अपना ग़ज़ब और अज़ाब करता है।''

अहलेबैत अ० की हदीसों में सुस्ती और निकम्मेपन को इन्सान की सबसे बुरी अख़्लाक़ी सिफ़त कहा गया है क्योंकि इस बुरी आदत की वजह से इन्सान की दुनिया भी बर्बाद होती है और आख़िरत भी।

इमाम मूसा काज़िम[अ०] इस बारे में फ़रमाते हैंः

''सुस्ती करने और हिममत खोने से बचो क्योंकि यह दोनों चीज़ें तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों से फ़ायदा उठाने से रोक देंगी।''

इन्सान जब तक ज़िन्दा है उसके लिए ज़रूरी है कि वह काम और मेहनत के ज़रिये समाज के लिए फ़ायदेमन्द साबित हो। जो काम भी वह कर सकता है उसे अच्छी तरह से पूरा करे, चाहे वह खेती-बाड़ी हो, जानवर पालना हो, इण्डस्ट्री या कल्चर से जुड़ा कोई काम हो या फिर कोई इल्मी काम हो। बेकार रहना न समाज के लिए अच्छा है, न ही इस से ख़ुदा ख़ुश होता है।

इसी लिए अगर एक निकम्मा इन्सान दुआ करता है तो उसकी दुआ भी क़ुबूल नहीं होती। इसमें कोई शक नहीं कि जितना एक जवान से काम और मेहनत की उम्मीद की जाती है उतनी उम्मीद एक कमज़ोर और बूढ़े से नहीं की जाती, इसलिए हर इन्सान अपने जिस्म और अक़्ल के हिसाब से काम करने का ज़िम्मेदार है।

बहुत सी हदीसें ऐसी भी हैं जिन से पता चलता है कि इस्लाम ने काम और मेहनत पर कितना ज़्यादा ज़ोर दिया है, लेकिन इसके बाद भी कुछ लोग यह समझते हैं कि इस्लाम ने दुनिया में एक अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने और काम या मेहनत करने से रोका है। अपनी इस बात को साबित करने के लिए वह उन आयतों और हदीसों का सहारा लेते हैं जिनमें मोमिन को अपने दिल में दुनिया की मोहब्बत बसाने और दुनिया की तरफ़ झुकने से रोका गया है। जबकि असल बात यह है कि दीन ने ग़लत अन्दाज़ में दुनिया की तरफ़ झुकाव और उस से दिल लगाने से रोका है।

हर धर्म के मानने वाले के साथ

इन्सानों की युनिवर्सल फ़ैमिली के सभी मेम्बर्स के लिए इस्लाम ने कुछ राइट्स बताए हैं। इस फ़ैमिली में तीन तरह के लोग हैं और तीनों के कुछ ख़ास राइट्स भी हैं। क़ुरआन की नज़र में इस फ़ैमिली के मेम्बर्स तीन तरह के हैंः 1. मुस्लिम, 2. वह नॉन मुस्लिम जो ख़ुदा पर ईमान रखते हैं, 3. वह लोग जो ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते।

क़ुरआन हर एक को अपना मैसेज देता है और हर एक के लिए राइट्स बयान करता है।

क़ुरआन ने जहाँ तीनों के अलग-अलग राइट्स बयान किये हैं वहीं मुसलमानों को यह हुक्म दिया है कि दूसरे दोनों तरह के इन्सानों के राइट्स का ध्यान रखो, यहाँ तक कि क़ुरआन मुसलमानों को ख़ुदा का इनकार करने वालों के साथ भी इंसाफ़ करने का हुक्म देता हैः

''जिन लोगों ने तुम्हारे साथ जंग नहीं की, दीन में झगड़ा नहीं किया और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, ख़ुदा ने तुम्हें उनके साथ नेकी करने और उनके साथ इंसाफ़ करने से नहीं रोका है। बेशक! ख़ुदा इंसाफ़ करने वालों को पसन्द करता है।''[1]

यह इस्लाम का एक बुनियादी हुक्म है कि मुसलमान पूरी युनिवर्सल फ़ैमिली के लोगों को एहतेराम की नज़र से देखें और उनके साथ वफ़ादारी निभाएं। सिर्फ़ उन लोगों के साथ मुक़ाबला करें जो मुसलमानों को पॉलिटिकल और सोशल तौर पर दबाते और उन पर ज़ुल्म करते हैं।

इमाम काज़िम[अ०] इसके बारे में फ़रमाते हैंः

''जिसके साथ भी तुम्हारा उठना-बैठना है उसके साथ अच्छा बर्ताव करो, चाहे वह यहूदी ही क्यों न हो।''

इसी लिए इस्लाम मुसलमानों को यह सिखाता है कि सियासी तौर पर भी अपने वादों को न तोड़ो। जब तक सामने वाले अपने वादे और एग्रीमेन्ट पर बाक़ी हैं तुम भी उसे तोड़ने की कोशिश न करो।

''जो तुम्हारे साथ वादा निभा रहे हैं तुम भी उनके साथ अपना वादा निभाओ।''

दूसरों के साथ मश्वरा करना

नबियों और इमामों का एक तरीक़ा यह भी था कि वह दूसरों के साथ मश्वरा किया करते थे। हसन इब्ने जहम का कहना हैः एक दिन हम लोग इमाम रज़ा[अ०] के पास बैठे हुए थे। इतने में उनके बाबा इमाम मूसा काज़िम[अ०] की बात निकल आई। इमाम[अ०] ने कहा कि कई बार ऐसा भी होता था कि मेरे बाबा अपने काले ग़ुलामों से भी मश्वरा किया करते थे जबकि उन लोगों को कोई भी कुछ नहीं समझता था और हम यह भी जानते हैं कि उन (इमाम) की अक़्ल के बराबर किसी की अक़्ल नहीं थी। कुछ लोग उन से कहते भी थे कि आप इतने अक़लमन्द होते हुए ऐसे लोगों के साथ मश्वरा क्यों करते हैं? आप जवाब में फ़रमाते थेः क्योंकि हो सकता है कि ख़ुदा उसी की ज़बान से हक़ बात बता दे। फिर इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमायाः कई बार वह लोग कोई ऐसा मश्वरा भी दे देते थे जो मेरे बाबा को बहुत अच्छा लगता था।

यह बात हमेशा याद रखना चाहिए कि मासूम अगर किसी से मश्वरा करता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसे मश्वरे की ज़रूरत है बल्कि मश्वरे की वजह ये हो सकती है कि-

- मश्वरा एक क़ुरआनी और अक़्ली फ़ार्मूला है और इमाम[अ०] इस फ़ार्मूले की अहमियत को समझाने के लिए दूसरों से मश्वरा किया करते थे।

- दूसरों से मश्वरा करने का मक़सद उनका एहतेराम भी हो सकता है।

- एक इमाम और एक लीडर की ज़िम्मेदारी है कि दूसरों को इस तरह से ट्रेनिंग दे कि वह लोग पूरी तरह से सिर्फ़ उसी पर डिपेण्ड न रहें बल्कि ख़ुद भी सोचना और ग़ौर फ़िक्र करना सीखें और अपने पैरों पर खड़े हों। वरना अगर कभी वह उनके बीच में नहीं होगा तो सब कुछ बन्द हो जाएगा।

■ प्रोफ़ेसर मोहम्मद अक़ील ख़ान

शैतान की चालों और उसके वस्वसों को समझिये

अल्लामा इब्ने जौज़ी छटी सेंचुरी हिजरी के एक मशहूर आलिम, ख़तीब और लिखने वाले थे। उन्होंने अपनी मशहूर किताब ''तलबीसे इब्लीस'' में शैतान के फन्दों के बारे में बताया है कि किस तरह शैतान इन्सान पर हमले करता है और कैसे उसे सीधे रास्ते से हटा देता है।

इसी किताब में उन्होंने एक वाक़िआ भी लिखा है जिसका ख़ुलासा यह है कि किसी जगह पर एक बहुत बड़ा आबिद (इबादत करने वाला) रहा करता था। वह हर वक़्त इबादत ही में लगा रहता था। उसे दुनिया के कामों से कोई मतलब नहीं था। एक दिन उसके महल्ले के एक आदमी ने उस से कहा कि कुछ दिनों के लिए मेरी बहन के खाने-पीने की ज़िम्मेदारी उठा लो क्योंकि मैं शहर से बाहर जा रहा हूँ। उस आबिद ने हामी भर ली।

अब हुआ यूँ कि हर दिन वह लड़की खाने के वक़्त उस आबिद के घर आकर दरवाज़ा खटखटा देती थी। आबिद दरवाज़े की ओट ही से उसे वह खाना दे दिया करता था। यह सिलसिला चलता रहा। एक दिन शैतान ने उस आबिद के दिल में यह वस्वसा डाल दिया कि वह लड़की इतनी दूर से चल कर आती है, रास्ते में दस लोग उसे देखते होंगे, तो क्यों न उसे तकलीफ़ से बचाने के लिए मैं (आबिद) ही उसके घर पर खाना पहुँचा दिया करूँ। आबिद को लड़की से बड़ी हमदर्दी महसूस हो रही थी और उसने यही करने का फ़ैसला कर लिया।

अब आबिद रोज़ाना उसके घर जाता था और लड़की दरवाज़े की ओट से खाना ले लेती थी। आबिद वापस चला जाता था।

फिर शैतान ने यह वस्वसा डाला कि लड़की अकेली है, उसका हाल और ख़ैरियत मालूम करने के लिए क्यों न दरवाज़े पर खड़े-खड़े उस से बात कर ली जाए। इस तरह उसका दिल भी बहल जाएगा। इस बार भी आबिद ने अपनी अक़्ल के बजाए शैतान के वस्वसे पर अमल किया और वह रोज़ाना उस लड़की से बातें करने लगा। जब कुछ दिन गुज़र गये तो शैतान ने समझाया कि इस तरह बाहर खड़े होकर बातें करना तो अच्छा नहीं है, चार लोग देखते हैं। बेहतर है कि घर में बैठ कर उसका हाल पूछ लिया जाए, और इसमें दिक़्क़त ही क्या है ? आबिद अब घर के अन्दर आकर उस लड़की से बातचीत करने लगा।

फिर शैतान को ज़्यादा मेहनत नहीं करना पड़ी और आबिद ने गुनाह कर ही डाला जिसके नतीजे में एक बच्चा भी पैदा हो गया। अब शैतान ने उसे समझाया कि यह तूने क्या कर दिया, तेरी सारी इबादत के बाद भी लोग तुझे मार डालेंगे। अगर जान प्यारी है तो कुछ कर! फिर

क्या था, आबिद ने लड़की और बच्चे दोनों को क़त्ल करके उसी मकान के नीचे दफ़्न कर दिया।

उस लड़की का भाई वापस आया और उस लड़की के बारे में पूछा। आबिद ने कह दिया कि वह एक बीमारी का शिकार होकर मर गई और उसे क़ब्रिस्तान में दफ़्ना दिया गया है। भाई रो-पीट कर चुप हो गया क्योंकि उसे आबिद पर भरोसा था।

एक दिन शैतान ने उस भाई के ख़्वाब में आकर उसे दिखा दिया कि उसकी बहन की लाश उसी मकान के नीचे दफ़्न है और उसका बच्चा भी है। साथ ही यह दिखाया कि यह काम उसी आबिद ने किया है। भाई ने जब खुदाई की तो सारी हक़ीक़त सामने आ गई। उसने आबिद को क़त्ल कर दिया। यूँ शैतान ने एक तीर से कई शिकार कर लिये।

यह एक पुराना वाक़िआ है। इसको देखते हुए अगर हम आज अपनी सोसाइटी को देखें तो शैतान तरह-तरह के तरीक़ों से औरतों और मर्दों को उकसा रहा है कि वह अपने रब के बताए रास्ते को छोड़कर अपने दिल के बनाए रास्तों पर चलें जैसे शैतान कॉलेजों और युनिवर्सिटियों में नौजवान लड़के-लड़कियों को उकसाता है कि वह एक-दूसरे को ग़लत नज़रों से देखें और बहाना यह बनाता है कि इस से क्या होता है, सिर्फ़ देख ही तो रहे हैं।

जब शैतान अपने इस काम में कामयाब हो जाता है तो वह एक-दूसरे के दिल में हमदर्दी भरे इमोशंस उभारता है। एक नौजवान लड़का किसी लड़की की छोटी सी परेशानी पर भी अपने दिल में उस से हमदर्दी महसूस करता है और उस परेशानी को दूर करना अपनी पहली ड्युटी समझता है। बहाना वही होता है कि यह तो एक अच्छा काम है।

अगली स्टेज में बातचीत की शुरुआत होती है जिसके पीछे भी यही वजह होती है कि बातचीत में क्या मुश्किल है, यह तो मार्डन ज़माना है, ज़माने के साथ चलना चाहिए वरना लोग बैकवर्ड समझेंगे। इसके बाद फ़ोन पर बातें, चैटिंग, मैसेजेस और फिर नौबत मुलाक़ातों तक पहुँच जाती है। इन सब बातों के बाद भी ज़रूरी नहीं है कि इसका अंजाम किसी बड़े गुनाह पर ही हो। हो सकता है कि इस मेलजोल का अंजाम निकाह ही हो लेकिन बहरहाल शैतान इन स्टूडेंन्ट्स को अच्छे कॅरियर, अच्छे अख़्लाक़, पढ़ाई में मेहनत और माँ-बाप की फ़रमाँबरदारी से तो दूर कर ही देता है। साथ ही दिमाग़ भी परेशान रहने लगता है, लड़का-लड़की दोनों अपने असली मक़सद से भी दूर हो जाते हैं, दोनों का वक़्त भी बर्बाद होता है, जिस्मानी गुनाह और ख़ुदा की नाफ़रमानी भी होती रहती है। कभी यह रिश्ते शराब और कबाब की महफ़िलों तक भी चले जाते हैं तो कभी दोस्तों में जेलेसी और कम्प्टीशन भी हो जाता है जो कभी क़त्ल जैसे जुर्म को भी जन्म दे देता है।

शैतान ने हर मिज़ाज के लोगों के लिए अलग-अलग तरह के फंदे तैयार कर रखे हैं। मगर इन सब बातों से ऐसा लगता है कि इन्सान पूरी तरह मजबूर है और शैतान को खुली छूट दे दी गई है।

क़ुरआन के मुताबिक़ शैतान का काम सिर्फ़ उकसाना और वस्वसे या शक पैदा करना है और बस। शैतान किसी को हाथ पकड़ कर मजबूर नहीं कर सकता। इसी लिए जो भी शैतान के झांसे में आएगा, अपने किये का वह ख़ुद ज़िम्मेदार होगा। आख़िर में शैतान यह कह कर अलग हो जाएगा कि मैं तुम्हारे हर काम से बरी हूँ।

अब आपको करना यह है कि शैतान के वस्वसों और शकों को पहचानिये और उसके झांसे से बचने के लिए ज़रूरी है कि कोई भी काम करने से पहले उसके बारे में सोचिए।

इसके बाद अपने रब की मर्ज़ी भी जानने की कोशिश कीजिए कि अल्लाह क्या चाहता है। अगर आपका काम क़ुरआन व सुन्नत के हिसाब से सही हो तो आगे बढ़िये वरना उसे शैतान के मुँह पर दे मारिये।

बेशक! यह एक मुश्किल काम है लेकिन पाक रिश्ते, क़ुरआन की समझ, अच्छी किताबों को पढ़ना, अपनी पर्सनॉलिटी को समझना, अपने ऊपर क़ाबू पाना और अपने रब से बराबर दुआ वग़ैरा करते रहना शैतान के हमलों से बचने में बहुत अहम रोल निभाते हैं।

इस जंग में शुरु ही से हथियार डाल देना अपनी ज़िन्दगी शैतान को सौंपने के बराबर है। ●

ज़ाहिरी चीज़ों पर हद से ज़्यादा ध्यान देने का सबसे बड़ा नुक़सान यह होता है कि हम अपने अंदर की सलाहियतों और स्किल्स को अंदेखा कर देते हैं।

■ परवेज़ अमीनी

मुस्लिम इब्ने औसेजा और हबीब इब्ने मज़ाहिर

हज़रत मुस्लिम[अ०] ने लोगों से मिलने के लिए अमीर मुख़्तार के घर को अपना सेन्टर बना रखा था। कूफ़े के सभी बड़े लोग नमाज़े शब के बाद हालात पर बात करने के लिए अमीर मुख़्तार के घर पर ही इकट्ठा होते थे।

आने वालों में मुस्लिम इब्ने औसेजा भी होते थे। लोग उन्हें जंगे ओहद के बूढ़े सिपाही के नाम से याद करते थे और उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे।

मुस्लिम कभी-कभार कूफ़े की गलियों में भी बैठ जाते थे और वही बैठकर लोगों को रसूले अकरम[स०] की जंगों की दिलचस्प बातें सुनाया करते थे।

मुस्लिम इब्ने औसेजा जंगे बद्र से जंगे सिफ़्फ़ीन तक के पीरियड की आंखों देखी पूरी एक हिस्ट्री थे। लोग उन्हें इन्सानियत, मोहब्बत और बहादुरी का बेहतरीन नमूना समझते थे। मुस्लिम इब्ने औसेजा ने यह सारी अच्छी बातें रसूले अकरम[स०] और उनके अहलेबैत[अ०] से सीखी थीं।

उनकी कोशिशें और हबीब इब्ने मज़ाहिर से उनकी दोस्ती की वजह से बहुत ही कम वक़्त में 18 हज़ार लोगों ने जनाबे मुस्लिम इब्ने अक़ील के हाथ पर बैअत कर ली थी। यह दोनों अपनी लम्बी उम्र की वजह से लोगों के लिए यज़ीदी हुकूमत के ख़तरों से बचने के लिए एक मज़बूत ढाल बने हुए थे।

लेकिन कूफ़े में इब्ने ज़ियाद के आते ही मुस्लिम इब्ने औसेजा की सारी प्लानिंग ढेर हो गई थी। बग़ावत को कुचलने के लिए इब्ने ज़ियाद चुन-चुन कर जुल्म कर रहा था। वह रसूले ख़ुदा[स०] के बूढ़े सहाबियों का भी कोई लिहाज़ नहीं कर रहा था बल्कि उल्टे उनका मज़ाक़ उड़ाया करता था।

इब्ने ज़ियाद को इस्लाम और रसूले इस्लाम[स०] की किसी भी बात से कोई मतलब नहीं था। अब तो हालत यह हो गई थी कि अमीरे शाम मुआविया और यज़ीद भी जुल्म करने में उससे पीछे रह गए थे। वह यज़ीदी हुकूमत में एक ख़तरनाक भेड़िया बना हुआ था।

6 मोहर्रम को मुस्लिम इब्ने औसेजा ने इब्ने ज़ियाद के सिपाहियों से ख़ुद को छुड़ा कर अपने घर वालों और हबीब इब्ने मज़ाहिर के साथ करबला जाने का फ़ैसला किया।

एक दिन बाद वह इमाम हुसैन के क़ाफ़िले तक पहुँच गये।

इमाम[अ०] का क़ाफ़िला करबला में था और इब्ने ज़ियाद के सिपाही हुर के सिपाहियों में शामिल होते जा रहे थे।

मुस्लिम बिन औसेजा की आरज़ू पूरी हो गई थी। अब उन्हें इन्तेज़ार था कि एक बार फिर अपनी बहादुरी से ज़ालिमों को सबक़ सिखाएं।

मुस्लिम की बारी आई। इमाम[अ०] के पास पहुँचे और जंग करने के लिए इजाज़त माँगी।

मुस्लिम शेर की तरह घोड़े पर सवार दुश्मन की तरफ़ लपके।

हर तरफ़ धूल उड़ने लगी। हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा था।

मुस्लिम की जंग जारी थी। तलवारों के टकराने और सिपाहियों की आवाज़ें मैदान में गूँज रही थीं।

और फिर वह वक़्त भी आया जब हर तरफ़ सन्नाटा छा गया था और सिपाहियों के भागते ही धूल भी छट गई थी।

हबीब मुस्लिम के पास पहुँचे। मुस्लिम का आख़िरी वक़्त था। हबीब ने कहाः ''मैं जानता हूँ

कि मुझे भी कुछ देर बाद तुम से मिलना है। फिर भी अगर कोई वसिय्यत हो तो बताओ।''

मुस्लिम मुस्कुराए और इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ इशारा करते हुए कहाः ''हुसैन इब्ने अली[अ०] के साथ ही रहना और इन्हें छोड़कर न जाना''।

इमाम हुसैन[अ०] मुस्लिम के सिरहाने आए और उनका सर अपनी गोद में रख लिया। मुस्लिम ने इमाम हुसैन[अ०] की गोद में दम तोड़ दिया। इमाम[अ०] के आँसू मुस्लिम के चेहरे पर गिरे और उनके चेहरे की धूल को साफ़ कर दिया।

लम्बे सफ़ेद बालों और नूरानी चेहरे ने उन्हें बहुत ख़ूबसूरत बना दिया था। ४० साल की उम्र कोई कम उम्र नहीं होती लेकिन वह अभी भी ख़ुदा और अहलेबैत[अ०] के रास्ते में आगे बढ़ने से थकते नहीं थे। इतना ही नहीं बल्कि कूफ़े के ज़रूरतमन्दों और कमज़ोर लोगों की मदद भी ख़ूब किया करते थे।

लोग उन्हें नहरवान के मुजाहिद के नाम से याद करते थे और उन से दुश्मनों के साथ रसूले इस्लाम[स०] की जंगों की बातें सुना करते थे।

हबीब इब्ने मज़ाहिर का बचपन रसूले ख़ुदा[स०] के आसपास ही गुज़रा था और उन्होंने आप[स०] से बहुत कुछ सीखा था।

जिस वक़्त इमाम हुसैन[अ०] मक्के आए तो हबीब उन लोगों में से थे जिन्होंने सबसे पहले इमाम[अ०] को ख़त लिखा था। ख़त क्या था ''मोहब्बत नामा'' था जिसमें हबीब ने इमाम हुसैन[अ०] के बारे में इमाम अली[अ०] से सुनी हुई हदीसें लिखी थीं।

कूफ़े के बड़े-बूढ़ों ने इमाम हुसैन[अ०] के नाम बहुत सारे ख़त लिखे थे जिसका नतीजा यह हुआ कि इमाम हुसैन[अ०] ने मुस्लिम इब्ने अक़ील को कूफ़े भेज दिया था कि जाओ और जाकर वहां के हालात मुझे बताओ।

हबीब ने मुस्लिम इब्ने औसेजा और दूसरे दोस्तों के साथ मिल कर कुछ ऐसे हालात बनाए कि लोग जनाबे मुस्लिम के हाथ पर बैअत के लिए अमीर मुख़्तार के घर जाने लगे।

हज़रत मुस्लिम के आने के साथ ही कूफ़ा अचानक जाग गया था जो कि अभी तक एक सोया हुआ शहर था। इस शहर में एक नई जान आ गई थी लेकिन अभी ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था कि अचानक सब कुछ दोबारा पहले जैसा हो गया।

इन हालात में हबीब ने कूफ़े से निकल जाने का फ़ैसला किया। इसलिए मुस्लिम इब्ने औसेजा के साथ रात के वक़्त कूफ़े से निकल गये ताकि इमाम[अ०] तक पहुँच जाएं।

सात मोहर्रम को सूरज डूबने ही वाला था कि इमाम[अ०] के यह दोनों दोस्त उनकी ख़िदमत में पहुँच गये। इमाम[अ०] उन्हें देख कर बहुत ख़ुश हुए।

तीन दिन बाद...

ज़ोहर का वक़्त क़रीब था।

अबू सुमामा साइदी इमाम[अ०] के पास पहुँचे और कहाः ''मौला! नमाज़ का वक़्त है। चाहता हूँ कि आख़िरी नमाज़ आपके साथ पढ़ूँ...।''

इमाम[अ०] ने आसमान की तरफ़ देखकर फ़रमायाः ''इन लोगों से कहो कि जंग रोक दें ताकि हम नमाज़ पढ़ सकें।''

हसीन इब्ने तमीम ने जवाब में कहाः ''तुम्हारी नमाज़ ख़ुदा की बारगाह में क़ुबूल नहीं होगी!''

हबीब ने कहाः ''ऐ जाहिल! रसूल[स०] के नवासे की नमाज़ क़ुबूल नहीं होगी और तुम्हारी नमाज़ क़ुबूल हो जाएगी ?''

हसीन ने हबीब का जवाब सुना तो उन पर हमला कर दिया।

हबीब घोड़े पर सवार हसीन की तरफ़ लपके और एक ही वार में उसे ज़मीन पर गिरा दिया। हसीन के साथी उसकी तरफ़ दौड़े और उसे हबीब के हाथों से छुड़ा लिया।

हबीब दुश्मन की तरफ़ बढ़े। सख़्त जंग शुरु हो गई और हबीब बड़ी बहादुरी से लड़े। दुश्मन के लगातार हमलों से ज़ख़्मी होकर हबीब ज़मीन पर गिर गये। हसीन हबीब के पास आया और हबीब के सर पर वार किया।

इब्ने ज़ियाद के सिपाही हबीब के पास इकटठा हो गये और उनके सर को बदन से अलग कर दिया।

इमाम हुसैन[अ०] हबीब के पास पहुँचे। इमाम[अ०] ने हबीब को आग़ोश में लिया और उन पर गिरया किया।

इब्ने ज़ियाद के सिपाही हबीब के कटे हुए सर के लिए भेड़ियों की तरह आपस में झगड़ने लगे। ठीक उसी वक़्त हज्जाज इब्ने मसरूक़ की अज़ान की ख़ूबसूरत आवाज़ करबला के मैदान में गूँजने लगी। ●

आयतुल्लाह शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी

इबादत की रूह

असल में ख़ुदा की याद और उसका ज़िक्र ही इबादत की रूह या जान है। इबादत की रूह यह है कि जब इन्सान इबादत कर रहा हो, कोई नमाज़ पढ़ रहा हो, कोई दुआ कर रहा हो या ऐसा दूसरा कोई भी काम कर रहा हो तो उसका दिल ख़ुदा की याद में डूबा हुआ हो।

क़ुरआन कहता हैः

''मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो।''[1]

एक दूसरी जगह क़ुरआन करीम फ़रमाता हैः

''नमाज़ हर बुराई और बदकारी से बचाने वाली है और अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है।''[2]

इस आयत में नमाज़ की क्वालिटी बताई गई है। लेकिन इस आयत में उस नमाज़ की बात हो रही है जो सच में नमाज़ हो यानी ऐसी नमाज़ हो जो अपनी सारी शर्तों और आदाब के साथ पढ़ी गई हो। ऐसी नमाज़ के बारे में आयत कह रही है कि नमाज़ इन्सान को बुरे कामों और बुराईयों से रोकती है।

यह हो ही नहीं सकता कि इन्सान सच्ची नमाज़ पढ़े और झूठा भी हो। यह भी नहीं हो सकता कि इन्सान सही नमाज़ पढ़े और उसका दिल ग़ीबत करने को चाहे। यह भी नहीं हो सकता कि इन्सान सही नमाज़ पढ़ने वाला हो और वह शराबी बन जाए या वह बेहयाई की तरफ़ चला जाए या किसी भी दूसरे बुरे काम की तरफ़ चल पड़े। नमाज़ का असर ही यह है कि यह इन्सान को एक नूरानी दुनिया में ले जाती है।

फ़ुज़ैल बिन अयाज़ नाम का एक आदमी इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के ज़माने में रहता था। उस की गिनती शहर के मशहूर लोगों में होती थी। एक ऐसा अदमी था जिसने अपनी उम्र का एक हिस्सा गुनाहों, बुराईयों, चोरी, डाके और इसी तरह के दूसरे कामों में बिताया था लेकिन बाद में उस के अंदर एक अजीब रूहानी बदलाव आ गया था और उसने अपनी बची हुई उम्र तक़्वा, ज़ोहद, इबादत, मारेफ़त व हक़ीक़त की तलाश में बिता दी थी।

इस आदमी की कहानी बड़ी मशहूर है। असल में यह एक मशहूर चोर था, डकैत था। यह अपनी कहानी बयान करते हुए कहता हैः एक रात मैंने एक घर को नज़र में रखा हुआ था कि आज रात इस घर में चोरी करूँगा। उस घर की दीवार ऊँची थी। आधी रात गुज़र चुकी थी। मैं दीवार के ऊपर चढ़ा, जब मैं दीवार के ऊपर पहुँचा और मैंने नीचे उतरना चाहा तो पड़ोस के किसी घर में (या उसी घर के ऊपर) एक आदमी बहुत अच्छे अन्दाज़ और बहुत

ख़ूबसूरत आवाज़ में क़ुरआन पढ़ रहा था। जब मैं दीवार के ऊपर पहुँचा तो इत्तेफ़ाक़ से वह यह आयत पढ़ रहा थाः

''क्या ईमान वालों के लिए अभी वह वक़्त नहीं आया है कि उनके दिल ख़ुदा के ज़िक्र और उसकी तरफ़ से नाज़िल होने वाले हक़ के लिए नर्म हो जाएं ?''[3]

ज़ाहिर सी बात है कि फ़ुज़ैल अरबी ज़बान जानता था और मतलब समझता था। इस आयत का मतलब यह है किः क्या वह वक़्त नहीं आया कि जब मोमिनों के दिल यानी ईमान का दावा करने वालों के दिल, ख़ुदा की याद के लिए नर्म हो जाएं ? कब तक उनके दिल सख़्त रहेंगे ? कब तक यह लोग ग़ाफ़िल रहेंगे ? कब तक सोए रहेंगे ? कब तक हराम खाते रहेंगे ? कब तक झूठ बोलते और ग़ीबत करते रहेंगे ? कब तक शराब और जुए में लगे रहेंगे ? कब तक अल्लाह से दूर भागते रहेंगे ?

यह ख़ुदा की आवाज़ है यानी इस आयत में ख़ुदा हम से बात कर रहा हैः ऐ मेरे बन्दे, ऐ मुसलमान! वह वक़्त कब आएगा जब ख़ुदा की याद के लिए तेरा दिल नर्म होगा ?

उस आदमी ने इस अन्दाज़ से इस आयत को पढ़ा था कि फ़ुज़ैल, जो दीवार पर चढ़ा हुआ था, उसे यूँ महसूस हुआ कि ख़ुदा उस से कह रहा हैः ऐ फ़ुज़ैल! तू कब तक चोरी और लूटमार करता रहेगा ?

यह आयत सुनकर फ़ुज़ैल काँपने लगा और कहने लगाः ख़ुदाया! बस अब वह वक़्त आ गया है। फिर वह उसी वक़्त दीवार से उतर आया। फिर उसने तौबा की, सच्ची तौबा... ऐसी तौबा जिसने उसे एक आबिद बना दिया था। अब वह इतना बड़ा आबिद बन गया था कि हर आदमी उसकी इज़्ज़त करने लगा था।

किताब ''मिस्बाहुश्शरीअह'' में फ़ुज़ैल की ज़बानी लिखा है कि एक दिन मैं इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के पास गया। मैंने इमाम[अ०] से कुछ सवाल किये और इमाम ने मुझे जवाब दिये। इसमें कोई शक नहीं कि फ़ुज़ैल ने इमाम[अ०] से आम इन्सानों की तरह मामूली सवाल नहीं किये होंगे, बल्कि उनके सवाल आम लोगों से एक लेवेल ऊपर होंगे। इमाम के जवाब भी दूसरों को दिये जाने वाले जवाब से एक लेवेल ऊपर होंगे।

इस किताब के मुताबिक़ फ़ुज़ैल ने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से इबादत और बन्दगी की हक़ीक़त के बारे में पूछा तो इमाम[अ०] ने फ़रमायाः फ़ुज़ैल! क्या तुम जानते हो कि बन्दगी क्या है ? क्या तुम जानते हो कि यह एक मोती है ? उबूदियत एक ऐसा मोती है जिसका ज़ाहिर बन्दगी है और इसकी हक़ीक़त और इसकी आख़िरी मंज़िल ''रुबूबियत'' है।

हो सकता है कि आप कहें कि इसका क्या मतलब है ? क्या इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] यह कहना चाहते हैं कि इबादत की शुरुआत बन्दगी है और इसकी आख़िरी मंज़िल ख़ुदाई है ? क्या यह कहना चाहते हैं कि एक बन्दा, बन्दगी के रास्ते पर चलते हुए ख़ुदाई तक पहुँच जाता है ?

नहीं! अहलेबैत[अ०] के यहाँ इस तरह की बातों की कोई जगह नहीं है।

''रुबूबियत'' का मतलब है कन्ट्रोल। यानी किसी चीज़ पर पूरी तरह से कन्ट्रोल करना या किसी चीज़ का मालिक होना। जब अबरहा ख़ान-ए-काबा को ढाने के लिए आया था तो उसके सिपाहियों ने हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के ऊँटों को पकड़ लिया था। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब अबरहे के पास गये। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को देखकर अबरहा उनकी इज़्ज़त करने लगा। यहाँ तक कि वह सोचने लगा कि अगर इस बूढ़े आदमी ने कह दिया कि मैं काबे से दूर हो जाऊँ और इसे न ढाऊँ, तो मैं इसकी बात मान लूँगा। लेकिन उसकी सोच के उलट, जब हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने बात की तो सिर्फ़ अपने ऊँटों के बारे में बात की यानी काबे के बारे में एक लफ़्ज़ तक नहीं कहा। अबरहे को ताज्जुब हुआ। वह बोला कि मैं तो आपको बहत बड़ा इन्सान समझा था। मेरा ख़याल था कि आप काबे की सिफ़ारिश करने के लिए आए हैं लेकिन मैंने देखा कि आप तो अपने ऊँटों की सिफ़रिश कर रहे हैं। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने भी उसे एक ख़ूबसूरत जवाब देते हुए कहाः ''मैं ऊँटों का मालिक हूँ और इस घर का भी एक मालिक है।''

ख़ुदा की इबादत और बन्दगी का असर यह है कि जितना इन्सान ख़ुदा की बन्दगी के रास्ते पर आगे बढ़ता जाता है, अपने नफ़्स और अपनी ख़्वाहिशों पर उसका उतना ही कन्ट्रोल मज़बूत होता जाता है। इसी को रुबूबियत कहते हैं। इबादत के नतीजे में इन्सान अपने नफ़्स का मालिक बन जाता है और अपने नफ़्स पर कन्ट्रोल पा लेता है।

1-सूरए ताहा/14
2-सूरए अनकबूत/25
सूरए हदीद/16

■ हुज्जतुल इस्लाम मुंज़िर हकीम

इमाम सज्जाद[अ०] क्यों रोया करते थे ?

एक मोमिन के रोने की कई वजहें हो सकती हैं। कभी वह ख़ुदा की अज़मत के सामने रोता है, कभी उस से मुलाक़ात के शौक़ में उसके आँसू बहते हैं और कभी उसका रोना ज़ुल्म के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाने के लिए होता है।

इसलिए रोने को हमेशा कमज़ोरी, डर और या डरपोक होने की निशानी नहीं समझना चाहिए और किसी के रोने पर सवाल नहीं उठाना चाहिए।

हदीसों में इमाम हुसैन[अ०] के ऊपर रोने पर जो इतना ज़ोर दिया गया है उसकी वजह यही है कि यह रोना जहाँ एक तरफ़ इमाम हुसैन[अ०] के लिए हमारी मोहब्बत का सुबूत देता है, वहीं यह ज़ालिम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना भी है और यही रोना ख़ुदा से क़रीब होने का ज़रिया भी है।

रसूले इस्लाम[स०] के बारे में मिलता है कि वह कभी अकेले में और कभी अपने सहाबियों के सामने इमाम हुसैन[अ०] के लिए रोया करते थे और जब आप से रोने की वजह पूछी जाती थी तो आप बताते थे कि जिबरईले अमीन ने बताया है कि मेरे नवासे हुसैन[अ०] को उनके घर वालों और उनके साथियों समेत शहीद किया जाएगा। उन्होंने मुझे वह मिट्टी भी दिखाई है जिस पर उनका ख़ून बहाया जाएगा।

इमाम हुसैन[अ०] पर रोने की एक ख़ास बात यह भी है कि इस से उन लोगों का ज़ुल्म भी सामने आता है जिन्होंने अहलेबैत[अ०] को सताया, परेशान किया और उन पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े। इसी लिए अहलेबैत[अ०] ने अपने चाहने वालों को इमाम हुसैन[अ०] और करबला के शहीदों का ग़म मनाने, उनकी मुसीबतों को बयान करने और उन पर ढाए जाने वाले ज़ुल्म को दूसरों के सामने सुनाने पर ज़ोर दिया है। इस काम के लिए अज्र व सवाब भी रखा गया है।

इमाम सज्जाद[अ०] के बारे में कहा जाता है कि आप करबला के बाद जब तक ज़िन्दा रहे इमाम हुसैन[अ०] की मुसीबत को याद करके रोते रहे, लेकिन आपका यह रोना एक बेटे-बाप के बीच पाई जाने वाली मोहब्बत और दिल में बहने वाले इमोशंस की वजह से नहीं था बल्कि इमाम सज्जाद[अ०] के रोने के पीछे कई बड़े मक़सद थे जैसे इमाम सज्जाद[अ०] इसके ज़रिये नई नस्ल को करबला जैसे इतने बड़े वाक़िए के बारे में बताना और समझाना चाहते थे ताकि इस वाक़िए को भुला न दिया जाए बल्कि नई नस्लें इसे याद रखें और आने वाली नस्लों को बताती रहें।

इमाम सज्जाद[अ०] के लिए सबसे बड़ी चीज़ यह थी कि आपने करबला के वाक़िए को अपनी आँखों से देखा था और वहाँ होने वाले एक-एक ज़ुल्म के बारे में आप जानते थे, इसलिए जब आपकी ज़बान से लोग करबला में ढाई जाने वाली मुसीबतों के बारे में सुनते थे तो उन पर इसका बहुत गहरा असर होता था। इमाम सज्जाद[अ०] का मक़सद सिर्फ़ करबला की मुसीबत को बयान करना और उस पर रोना नहीं होता था बल्कि वह बनी उमैय्या का ज़ालिम चेहरा भी दुनिया को दिखाना चाहते थे ताकि लोग अच्छी तरह से जान लें और सब को पता चल जाए कि बनी उमैय्या एक ज़ालिम, इस्लाम के दुश्मनों और इन्सानियत के दुश्मनों का एक टोला है जिसने इस्लाम का लिबास पहन लिया है वरना सच्चाई यह है कि उनका इस्लाम से कोई रिश्ता नहीं है।

करबला के बाद इमाम सज्जाद[अ०] बार-बार और जगह-जगह रोया करते थे और इतना रोया करते थे कि एक बार आपके एक ग़ुलाम ने कहाः मौला! इतना न रोया कीजिए। मुझे डर है कि कहीं आपको कुछ हो न जाए।''

इमाम[अ०] ने उसके जवाब में फ़रमायाः ''तुम मेरा दुख नहीं समझते, मैं अपने दुख की शिकायत ख़ुदा से करूँगा। मैं ख़ुदा की इनायत से वह सब कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। मैं जब भी अपनी दादी फ़ातिमा की औलाद के क़त्ल होने को याद करता हूँ तो मेरा गला रुंध जाता है।''

एक बार किसी ने आपसे कहाः मौला! क्या अब वह वक़्त नहीं आ गया है कि आप रोना छोड़ दें, आख़िर कब तक रोईयेगा ?

इमाम[अ०] ने फ़रमायाः क्या तुम नहीं जानते कि हज़रत याक़ूब की मुसीबत

मेरी मुसीबत से बहुत छोटी थी मगर फिर भी उन्होंने ख़ुदा की बारगाह में शिकायत की थी। उनका बस एक बेटा उन से अलग हुआ था और वह ज़िन्दा भी था, लेकिन मेरी आँखों के सामने तो मेरे बाबा और मेरे सारे प्यारे मारे गये हैं।

इमाम सज्जाद[अ०] के सामने जब पानी लाया जाता था तो पानी को देखकर उन्हें करबला वाले और उनकी प्यास याद आ जाती थी, और उन्हें याद करके इमाम[अ०] इतना ज़्यादा रोते थे कि आँसू पानी में मिल जाया करते थे। जब कोई पूछता था कि मौला पानी देख कर इतना क्यों रोते हैं तो फ़रमाते थेः मैं कैसे न रोऊँ? मेरे बाबा को प्यासा शहीद कर दिया गया जबकि जानवरों और दरिन्दों को पानी पिलाया गया।

इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] अपने चाहने वालों के सामने इमाम हुसैन[अ०] और दूसरे अहलेबैत[अ०] पर रोने की फ़ज़ीलत भी बताते थे और उन से अहलेबैत[अ०] के लिए रोने को कहा करते थे।

इमाम सज्जाद[अ०] ने एक बार अपने साथियों से फ़रमाया था कि जो आँख भी हुसैन इब्ने अली[अ०] की मुसीबत पर रोएगी और उस आंख से आँसू निकलेंगे ख़ुदा उसके लिए जन्नत में ख़ास घर बनाएगा।

इमाम सज्जाद[अ०] से जब लोग रोने की वजह पूछा करते थे तो वह करबला की मुसीबतों के साथ बनी उमैय्या का ज़ुल्म भी बताया करते थे, ताकि लोगों को असल बात भी पता चल जाए।

इसका नतीजा यह होता था कि लोग जिन्हें मुसलमानों का ख़लीफ़ा और लीडर समझते थे और उनके बारे में इस तरह के ज़ुल्म के बारे में सोच भी नहीं सकते थे लेकिन जब उन्हें पता चलता था कि उन्होंने इस तरह के ज़ुल्म किये हैं तो उनके दिलों में काफ़ी हद तक ज़ुल्म और ज़ालिमों से नफ़रत पैदा हो जाती थी।

हालात ऐसे थे कि इमाम सज्जाद[अ०] खुल कर बनी उमैय्या कि ख़िलाफ़ बात नहीं कर सकते थे और सीधे-सीधे उनका ज़ुल्म लोगों को नहीं बता सकते थे। इसी लिए इन बातों को बयान करने के लिए रोना आपकी नज़र में एक अच्छा रास्ता था।

ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जिहाद का यह तरीक़ा आपने अपनी दादी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] से सीखा था। हज़रत फ़ातिमा[अ०] का रोना भी वक़्त के ज़ालिमों के ख़िलाफ़ एक प्रोटेस्ट ही था। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] भी दिन-रात रोया करती थीं और आपके रोने से ज़ालिम इतने परेशान थे कि आपके रोने पर रोक लगाया करते थे जिसकी वजह से हज़रत अली[अ०] ने आपके लिए एक कमरा अलग से बना दिया था जिसमें बैठ कर आप रोती थीं और मर्सिया पढ़ा करती थीं।

कुछ लोग आपके रोने को जज़्बाती रोना कहते हैं और आपके बाबा रसूले ख़ुदा[स०] की मौत से जोड़ते हैं लेकिन हक़ीक़त यह है कि अगर आपको सिर्फ़ अपने बाबा के ग़म में रोना होता तो चुप-चाप ही रो लेतीं, दूसरों के सामने रोने का मक़सद ही यह था कि लोग उस ज़ुल्म की तरफ़ ध्यान देने लगें जो उन पर हुआ था।

लोगों के सामने इमाम सज्जाद[अ०] भी इसी लिए खुल कर रोते थे क्योंकि लोगों के ज़हनों में यह सवाल उभरने लगे कि यह इतना क्यों रोते हैं और फिर लोग आप से रोने की वजह पूछें ताकि जब लोग इमाम[अ०] से रोने की वजह पूछें तो इमाम उन्हें असली वजह बता सकें क्योंकि हालात ही कुछ ऐसे थे कि इमाम दूसरे माहौल में आसानी के साथ वह सारी बातें नहीं समझा सकते थे। ●

دوماہی مؤمّل لکھنؤ

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

آج ہی ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

माँएं बच्चे मोबाइल

■ उम्मे मोहम्मद सलमान

घर में इंटर होते ही शाहिदा बेगम का टेम्पर हाई हो गया।

''ज़ैनब! इधर आओ!'' ज़ैनब भागती हुई किचन से आई।

''जी अम्माँ क्या हुआ ?''

''मैंने हज़ार बार कहा है तुम से कि सअद को मोबाइल मत दिया करो और तुम ने फिर दे रखा है।''

ज़ैनब बोली, ''अम्माँ मैं क्या करूँ रोता है ? तंग करता है। काम ही नहीं करने देता। क्या इसी को लेकर बैठी रहूँ ? आप तो घर पर थीं नहीं और सअद इतना परेशान कर रहा था तो मैंने मोबाइल पर कार्टून लगा दिया।''

''बस करो बहू! देखे तुम्हारे काम, जब तक बच्चा सो रहा होता है तो ख़ुद टी.वी. ड्रामों, व्हाट्स-एप और फ़ेसबुक पर लगी रहती हो और जब यह उठ कर रोने लगता है तो तुम्हें घर के काम याद आ जाते हैं। मैं पूछती हूँ कि तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई का कुछ फ़ायदा भी है कि नहीं ?तुम्हें इतना ही नहीं पता कि बच्चों के लिए कितनी ख़तरनाक हैं यह सब चीज़ें ?''

''अम्मी! आपको बस मौक़ा चाहिए मुझे बातें सुनाने का और कुछ नहीं। सारी दुनिया के बच्चे अब मोबाइल, कम्प्युटर और टैबलेट से ही खेलते हैं।'' ज़ैनब तड़क कर बोली।

''हाँ-हाँ! सारी दुनिया अगर कुँएं में जा गिरे तो तुम भी छलांग लगा दोगी क्या ? अरे! हमने भी तो सात बच्चे पाले हैं, न उस वक़्त मोबाइल थे, न यह टी.वी. का भोंपू चौबीस घंटे बजता था। जब बच्चे सोए हुए होते थे तो घर के सारे ज़रूरी काम उसी वक़्त ख़त्म कर लेते थे, वरना बच्चे साथ-साथ ही लगे रहते थे। सब्ज़ी बना रही होती थी तो साथ में दो चार पत्ते और डंठल वग़ैरा धोकर युमना और हुमना को भी पकड़ा देती थी, वह उन्हीं से खेलती रहती थीं। रोटी पकाते में तंग करती थीं तो ज़रा सा आटे का पेड़ा प्लेट में रख कर उनको भी दे देती थी। मोहसिन जब ज़्यादा ही परेशान करता था तो एक चम्मच और प्लेट उसको दे दिया करती थी। वह उसी को बजा-बजा कर खेलता रहता था। झाड़ू देते हुए एक छोटी झाड़ू उसको भी पकड़ा दिया करती थी और वह भी साथ-साथ झाड़ू देते हुए ख़ुश होता था। रात को बच्चों को लेकर बैठ जाती थी और प्यारी-प्यारी कहानियाँ सुनाया करती थी उन्हें। तुम्हारी तरह मार-पीट कर नहीं पाले हम ने अपने बच्चे, बड़ी मोहब्बत और मेहनत से पाले हैं।''

''अम्मी! तो क्या मैं मोहब्बत नहीं करती बच्चों से ? और क्या मैं हमदर्द नहीं हूँ बच्चों की ?'' अब की बार तो ज़ैनब सचमुच तड़प उठी।

''तुम बच्चों की हमदर्द होतीं तो यह करतब दिखातीं ? एम.ए. करके भी तुम्हें बच्चे पालने न आए ?''

''अम्मी! हद करती हैं आप भी! मैं युनिवर्सिटी में पढ़ने जाती थी या बच्चे

पालना सीखने जाती थी ?'' ज़ैनब बोली।

''अरे चूल्हे में डालो ऐसी पढ़ाई, जो इन्सान को अपना भला-बुरा भी न सिखा सके। आज इन सब चीज़ों ने मिल कर बच्चों को अपाहिज बना दिया है। हिलते ही नहीं हैं मोबाइल और कम्प्युटर के सामने से, न दो घड़ी माँ-बाप के पास बैठने का वक़्त है, न कुछ दीन-दुनिया का ख़याल। माँओं को भी ज़रा परवा नहीं कि बच्चे किस तरफ़ जा रहे हैं ? उन्हें अपने ही चोंचलों से फ़ुरसत नहीं मिलती। कभी शॉपिंग, कभी टेलर के चक्कर, कभी पार्लर जाना, कभी टी.वी. के आगे बैठी हैं तो कभी मोबाइल में सर दे रखा है। इन माँओं के पास वक़्त कहाँ है बच्चों की परवरिश करने का ?''

अभी सास-बहू की आपस में बहस चल ही रही थी कि सअद फिर मोबाइल उठाकर इमामा के झूले के पास आ खड़ा हुआ। इमामा भी नींद से जाग चुकी थी और सअद के हाथ में चमकते मोबाइल को देख-देख कर हुमक रही थी, हाथ-पैर चला रही थी। सअद मोबाइल को कभी उसके पास करता और कभी दूर कर लेता।

ज़ैनब ने सास का ध्यान उस तरफ़ मोड़ा, ''यह देखिये अम्मी! छः सात महीने की बच्ची भी इस फ़ोन की तरफ़ लपक रही है, अब क्या करूँ मैं ? कैसे बचाऊँ इन्हें ?'' ज़ैनब थक कर अम्मी के पास ही आ बैठी।

शाहिदा बेगम ने एक नज़र ज़ैनब के चेहरे की तरफ़ देखा जिस पर थकन और परेशानी नज़र आ रही थी। नज़रें अपनी मासूम बच्ची पर जमी हुई थीं, जो टकटकी बाँध कर मोबाइल की स्क्रीन को देख रही थी और ख़ूब जोश में हाथ-पैर चला रही थी। कुछ देर को दया सी आ गई शाहिदा बेगम को, बहू सुबह से कामों में लगी है और अब मैंने भी इतनी बातें सुना दीं। ?

भला ऐसे में नसीहत क्या असर करेगी ? ''तो फिर क्या करूँ ? कैसे एहसास दिलाऊँ ज़ैनब को उसकी ग़लती का ?'' शाहिदा बेगम दिल ही दिल में सोचने लगीं।

दोपहर के खाने से फ़्री होकर ज़ैनब, सास की दवा लिये उनके कमरे में ही आ गई।

''अम्मी दवा खा लीजिए!'' शाहिदा बेगम को सचमुच ज़ैनब पर प्यार आ गया, कुछ भी है, मगर मेरी ख़िदमत बहुत करती है। खाना, कपड़े, दवा हर चीज़ वक़्त पर तैयार रखती है। बस न जाने बच्चों की तरफ़ से इतनी सुस्ती क्यों करती है ?उन्होंने ज़ैनब को अपने पास ही बिठा लिया।

''बहू! कुछ देर मेरे पास बैठो, तुम से बात करना है।''

''जी अम्मी, कहिये!''

''बेटा! तुम्हें एहसास नहीं होता बच्चों का, हर वक़्त मोबाइल से लगे रहना कितना ग़लत है। ?''

''एहसास होता है अम्मी, क्यों नहीं होता ?'' ज़ैनब बड़े दुख से बोली। ''लेकिन चारों तरफ़ यही सब कुछ चल रहा है तो बस मैं भी... हर किसी के बच्चे अब इन्हीं चीज़ों से खेलते हैं अम्मी।''

''यही तो हमारी प्रॉब्लम है ज़ैनब! हम लोग आँख बन्द करके ज़माने के साथ भागते हैं। फ़ायदा नुक़सान को देखे बग़ैर, इन चीज़ों ने हमारे समाज को बर्बाद कर दिया है। तुम्हारे बच्चे अभी बहुत छोटे हैं। तुम उन्हें इस बर्बादी से बचा सकती हो।''

''मगर कैसे अम्मी ?''

''देखो बेटा! यह बच्चे तुम्हारे हाथ में खिलौना नहीं हैं। यह अल्लाह की दी हुई अमानत हैं जिसका हिसाब होगा तुम से। कल क़यामत के दिन तुम्हें अल्लाह को जवाब देना है कि बच्चों की परवरिश का क्या हक़ अदा किया ? क्या इस्लाम के मुताबिक़ उनकी परवरिश की या आज़ाद छोड़ दिया ?सिर्फ़ अच्छा खिलाना-पिलाना, पहनाना, स्कूल भेज देना और इंज्वाय करवा देना ही तो बच्चों की ज़रूरत नहीं है। उनको अच्छे आदाब सिखाना, बुरी बातों से बचाना और सही इस्लामी उसूलों पर उनकी परवरिश करना भी माँ-बाप की ही ज़िम्मेदारी है।''

''पहले ज़रा तुम अपनी ख़बर लो। नमाज़ पढ़ती हो और कभी नहीं भी पढ़ती, तिलावत किये हुए तुम्हें कई-कई दिन गुज़र जाते हैं, टी.वी. का हर ड्रामा देखना तुम्हारे लिए ज़रूरी है, जब तुम ख़ुद ही अल्लाह की नाफ़रमानी करोगी तो बच्चे कैसे तुम्हारी सुनेंगे ?कैसे बचाओगी तुम उन्हें ज़माने की

तेज़ हवाओं से ?फ़ितना, फ़साद और बेहयाई की जो आग सोशल मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के ज़रिये चारो तरफ़ लगी है उस से कैसे बचाओगी तुम इन मासूम फूलों को ? अगर तुम ने इन्हें अपने दीन के साथ न जोड़ा तो यह बर्बाद हो जाएंगे ज़ैनब! आज दीन पर चलने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।''

''बच्चे माँ-बाप को जैसा करते देखते हैं, वैसा ही ख़ुद करते हैं। तुम पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो, क़ुरआन मजीद की रोज़ाना तिलावत किया करो, गुनाहों से बचा करो और बच्चों के लिए ख़ूब नेकी और हिदायत की दुआ माँगा करो। अगर तुम चाहो तो अभी भी सब कुछ ठीक हो सकता है।''

''मगर कैसे अम्मी ? क्या मेरे नमाज़ पढ़ने से यह मोबाइल से खेलना छोड़ देंगे ?''

''हाँ ज़ैनब! जब तुम अपने रब की इताअत करोगी, गुनाहों से बचोगी तो यह बच्चे भी तुम्हारी बात मानेंगे। तुम इन्हें रोकोगी तो यह ज़रूर रुक जाएंगे। इसके अलावा भी तुम दूसरे तरीक़े अपना सकती हो।''

''देखो! इमामा अभी छोटी है। उसके पास तो तुम बिल्कुल भी मोबाइल लेकर न बैठा करो। इसके लिए तो बस इतना ही करना काफ़ी है और सअद पर तुम्हें थोड़ी मेहनत करना पड़ेगी। तुम उसका ध्यान दूसरी तरफ़ मोड़ दो। मोबाइल को तुम ख़ुद कम से कम इस्तेमाल करो। बच्चों के लिए तुम्हें यह क़ुर्बानी देना होगी। फ़ाल्तू वीडियोज़ और गेम्स वग़ैरा मोबाइल से डिलीट कर दो। जब उसे अपनी पसन्द की चीज़ें उसमें नहीं मिलेंगी तो ख़ुद ही इंट्रेस्ट कम होता जाएगा। सअद के लिए कुछ ऐसे खिलौने ले आओ जिस से उस में कुछ कर दिखाने का जज़्बा पैदा हो। ब्लॉक्स ख़रीद दो ताकि वह तरह-तरह की चीज़ें बनाता रहे, बैट-बॉल से खिलाया करो, वॉटर कलर, कलर पेंसिल लाकर दे दो कि उन से ही काग़ज़ पर कुछ न कुछ बनाता रहे और फिर उस पर उसको एप्रिशियेट भी करो।''

''मोहसिन से कहो कि शाम को थोड़ी देर के लिए सअद को पास के पार्क में ले जाया करे। बच्चों के साथ खेलेगा तो ध्यान बट जाएगा। घर के कामों के बीच भी उसे अपने साथ-साथ रखा करो, छोटा-मोटा काम उसको भी दे दिया करो। इसके अलावा बच्चों को अपने पास लेकर बैठा करो और जानवरों की कहानियाँ सुनाया करो क्योंकि बच्चे उनमें बहुत इंट्रेस्ट लेते हैं। अच्छी-अच्छी दीन की बातें और इस्लामी हिस्ट्री की कहानियाँ सुनाया करो। बच्चे का ज़हन साफ़ स्लेट की तरह होता है उस पर जो भी लिखोगे वह उसी को पढ़ेगा और उसी के मुताबिक़ चलेगा।''

ज़ैनब बहुत गहरी सोच में थी। ''लेकिन इन सब के लिए बहुत सब्र की ज़रूरत है अम्मी।''

हाँ तो बेटा कुछ मुश्किलें झेलना भी सीखो, इन्हीं आसानियों के लिए तो माँएं आज बड़े आराम से बच्चों को मोबाइल और कम्प्युटर स्क्रीन की आदत डलवा रही हैं और ख़ुद मज़े से अपने कामों में लगी रहती हैं। भला बताओ तो सही, वह कौन लोग हैं जो छोटे बच्चों के हाथ में मोबाइल पकड़ा-पकड़ा कर ख़ुश होते हैं ? यह उनके अपने माँ-बाप ही तो होते हैं। शुरु से ही इन चीज़ों से बच्चों को दूर रखा जाए तो क्यों ऐसी नौबत आएगी भला ?

अगर देना ही है तो बच्चों को समझा दो कि बस थोड़ी देर के लिए मिलेगा क्योंकि यह आपकी नहीं, मम्मी के काम की चीज़ है।''

''आप ठीक कह रही हैं, अम्मी! मैं सच में बच्चों की परवरिश ऐसी नहीं कर रही हूँ जैसी करना चाहिए। मैं अब भरपूर ध्यान दूँगी अपने बच्चों की तरफ़, यही तो मेरी दुनिया की रौनक़ और आख़िरत का ख़ज़ाना हैं, मैं इन्हें किसी भी हाल में बर्बाद नहीं होने दूँगी चाहे मुझे कितनी ही मुश्किलों का सामना करना पड़े।''●

आयतुल्लाह जाफ़र सुब्हानी

कुछ और जानते हैं ख़ुदा की सिफ़तों के बारे में

ख़ुदा की मारेफ़त और उसे पहचानने का एक तरीक़ा यह है कि ख़ुदा की सिफ़तों को जाना और समझा जाए। उसकी सिफ़तें अनगिनत हैं जिन्हें उसके अलावा कोई नहीं गिन सकता, लेकिन हम जिस हद तक जान और समझ सकते हैं उस हद तक जानना और समझना हमारे लिए ज़रूरी है। इसके लिए हम क़ुरआन और अहलेबैत[अ०] की हदीसों से मदद ले सकते हैं। इस आर्टिकिल में हम ख़ुदा की तीन सिफ़तों पर बात कर रहे हैं:

1- ख़ुदा बोलता है

क़ुरआन करीम ने ख़ुदा की बहुत सी सिफ़तों के बारे में बात की है जिनमें से एक सिफ़त ''ख़ुदा का बात करना'' है। जैसा कि क़ुरआन फ़रमाता है:

''ख़ुदा ने मूसा के साथ एक ख़ास अन्दाज़ में बात की।''[1]

या फ़रमाता है:

''ख़ुदा किसी भी बन्दे से बात करता है तो वही के ज़रिये या पर्दे के पीछे से या अपनी तरफ़ से किसी को भेज कर।''[2]

इन आयतों से तो यही समझ में आता है कि ख़ुदा बात करता है। ज़ाहिर है कि क़ुरआन की बात में कोई शक नहीं किया जा सकता, लेकिन इस आयत की हक़ीक़त क्या है, यह एक बड़ा सवाल है ?और एक सवाल यह भी है कि यह सिफ़त सीधे ख़ुदा की हस्ती से जुड़ी हुई है या यह ख़ुदा के किसी एक काम के तौर पर जानी जाती है ?

यह बात तो अपने आप समझ में आती है कि बात करने के बारे में जो सोच हम इन्सानों के बारे में रखते हैं, वह ख़ुदा के बारे में सहीं नहीं है।

इस सिफ़त का ज़िक्र क़ुरआन ने किया है। इसलिए इसके बारे में भी क़ुरआन से ही सवाल किया जाए तो ज़्यादा अच्छा है।

क़ुरआन ने ख़ुदा के बारे में इस सवाल का जवाब यह दिया है कि ख़ुदा तीन तरीक़ों से अपने बन्दों के साथ बात करता है: ''ख़ुदा ने किसी भी बन्दे से बात की है तो वही के ज़रिये या पर्दे के पीछे से या अपनी तरफ़ से किसी को भेज कर।''

यानी ख़ुदा इन्सान से:

1- वही और इल्हाम के ज़रिये उसके दिल में

बात डाल कर अपना मैसेज पहुँचाता है;

2- किसी चीज़ के ज़रिये से इन्सान आवाज़ सुनता है लेकिन उसे ख़ुदा दिखाई नहीं देता जैसे जनाबे मूसा[अ०] से ख़ुदा ने बात की थी;

3- फ़रिश्ते को भेज कर अपना मैसेज सुनाता है।

इन तीनों हालतों को ख़ुदा का बात करना और मैसेज पहुँचाना कहा जाता है, जो कि ख़ुदा की एक सिफ़त के तौर पर बयान किया गया है।

इसी तरह ख़ुदा ने अपनी पैदा की हुई सभी चीज़ों को अपने ''कलेमात'' यानी बातों का नाम दिया है और ख़ुदा उनके ज़रिये अपने बन्दों से बात करता है और उनके ज़रिये उन तक अपनी बात या अपना मैसेज पहुँचाता है जैसे क़ुरआन में लिखा है:

''कह दीजिए कि अगर समन्दर ख़ुदा की बातों को लिखने के लिए सियाही (इंक) बन जाएं तो समन्दर ख़त्म हो जाएंगे लेकिन ख़ुदा की बातें ख़त्म नहीं होंगी।''[3]

इस आयत में ''कलेमात'' ख़ुदा की बनाई हुई चीज़ों को कहा गया है, जिन्हें ख़ुदा के अलावा कोई गिन भी नहीं सकता।

हज़रत अली[अ०] ने अपनी एक हदीस में ख़ुदा के बात करने की सिफ़त के बारे में कुछ यूँ समझाया है: ''ख़ुदा जब किसी चीज़ को बनाना चाहता है तो उस से कहता है: हो जा (बन जा) और वह हो जाती (बन जाती) है लेकिन इसके लिए उसे कोई आवाज़ नहीं निकालना पड़ती और न ही कुछ कहना पड़ता है बल्कि उसका कलाम यही है कि वह चीज़ बनाता है और उसे सामने ले आता है।''

इस हदीस से समझ में आता है कि ख़ुदा के ''बात करने की सिफ़त'' दो शक्लों में सामने आती है: कभी बात करने की शक्ल में और कभी कुछ बनाने की शक्ल में। दोनों ही शक्लों में ख़ुदा की इस सिफ़त का ताल्लुक़ उसके कामों से है, सीधे उसकी ज़ात या उसकी हस्ती से नहीं है।

2- ख़ुदा सच्चा है

ख़ुदा की एक सिफ़त ''उसका सच्चा'' होना है। उसकी सभी बातें सही और सच्ची होती हैं। उनके बारे में झूठ होने का शक भी नहीं किया जा सकता है।

इसकी दलील भी बिल्कुल आसान है।

कोई इन्सान झूठ बोलता है तो क्यों बोलता है ?

(1) जिहालत की वजह से।

(2) ज़रूरत की वजह से।

(3) किसी डर की वजह से।

ख़ुदा न जाहिल है, न उसे किसी की ज़रूरत है और न ही वह किसी से डरता है।

इसलिए उसके बारे में शक भी नहीं किया जा सकता कि वह झूठ बोलेगा। साथ ही झूठ एक बुरा काम है और ख़ुदा कभी कोई बुरा काम नहीं करता।

3- ख़ुदा हकीम है

ख़ुदा की एक सिफ़त यह है कि वह ''हकीम'' है। ख़ुदा के हकीम होने का क्या मलतब है ?ख़ुदा के हकीम होने का मतलब यह है कि:

1- उसके सभी काम परफ़ेक्ट और मज़बूत होते हैं; इसकी मिसाल यह है कि उसने दुनिया में जो भी बनाया है वह बिल्कुल परफ़ेक्ट है और उसमें किसी तरह की कोई कमी नहीं है। जैसे क़ुरआन फ़रमाता है:

''ख़ुदा की बनाई हुई चीज़ों में कोई कमी या ऐब नहीं है।''[4]

2- ख़ुदा बुरे, फ़ालतू और बेकार काम नहीं करता है जैसे क़ुरआन में है:

''ज़मीन और आसमान और उनके बीच जो कुछ भी है उसे हम ने यूँ ही बेकार पैदा नहीं किया है।''[5]

ख़ुदा के बारे में हमारा ईमान यह है कि उसमें कोई कमी और ऐब नहीं है, इसलिए उसके कामों में भी कोई कमी ओर ऐब नहीं होना चाहिए। इसकी एक मिसाल यह है कि उसकी बनाई हुई हर चीज़ और उसके काम के पीछे एक मक़सद हो।

1-सूरए निसा/164
2-सूरए शूरा/51
3-सूरए कहफ़/109
4-सूरए नमल/88
5-सूरए सॉद/27

■ नूरुल ऐन अनवर

ज़िन्दगी किस चीज़ का नाम है? आराम, सुकून और इत्मिनान या कामयाबी और आगे बढ़ने का? या ग़म, दुख, तकलीफ़ और इम्तेहान का?

शायद ज़िन्दगी इन दोनों में से किसी एक चीज़ का नाम नहीं बल्कि उतार-चढ़ाव के साथ चलते रहने के एक बड़े अच्छे सिस्टम का नाम है जिसे इन्सान की छोटी सी यह अक़्ल नहीं समझ पाती है। बाद में वक़्त के साथ-साथ इन्सान जान लेता है कि ज़िन्दगी आसान नहीं है और यह एक दोराहे का नाम है जिस पर चलने के लिए अपनाए जाने वाले रवय्ये या बिहेवियर इस सफ़र की कसौटी डिसाइड कर जाते हैं। ''बेशक सख़्ती के साथ आसानी है'' क़ुरआन की यह लॉजिक ज़िन्दगी की लॉजिक को समझा रही है, इस पर यक़ीन रखते हुए जो चल पड़े और ख़ुशी व ग़म के वक़्त में यह याद रखे कि ''यह वक़्त भी गुज़र जाएगा'' तो ज़िन्दगी से हर-हर पल मिलने वाली सीख उसके लिए बेहतरीन गाइड बन जाती है।

हर इन्सान ज़िन्दगी को एक अलग अन्दाज़ से देखता है। ज़िन्दगी में आने वाले कठिन हालात से हर समझदार एक अलग तरीक़े से निमटता है।

इस मामले को और अच्छी तरह से समझने के लिए हम ने समाज में पाए जाने वाले अपने आसपास के लोगों से बातचीत की और पता लगाया कि मुश्किल घड़ी में उन्होंने ज़िन्दगी को कैसा पाया और क्या जाना।

उनकी हक़ीक़त से भरी हुई यह बातें हमारे पढ़ने वालों के लिए ज़रूर काम आएंगी।

1) आपकी ज़िन्दगी का सबसे मुश्किल वक़्त कौन सा था जब आपका दिल तड़प उठा हो और सब कुछ बन्द होता हुआ लगा हो?

2) ऐसे में सबसे पहले आपका क्या रीएक्शन था?

3) इस से आपने अपनी ज़िन्दगी के लिए क्या सीखा?

यह वक़्त भी गुज़र जाएगा

नेहा बख़्तियार (कॉलेज स्टूडेंट)

1) जब मेरा रिज़ल्ट आया और मैं बोर्ड के कुछ पेपर्स में फ़ेल हो गई तो वह वक़्त बहुत कठिन था। लोगों के सवालों और तानों ने मुझे तोड़ कर रख दिया था।

2) सबसे पहला रीएक्शन यह था कि लोगों के बिहेवियर और हालात की सख़्ती ने मुझे अपनी जान लेने पर तैयार कर डाला था। ऐसा लगता था कि मुझे जीने का हक़ ही नहीं है। अपने आप से नफ़रत हो गई थी। ऐसे में मेरे घर वालों ने ही मुझे संभाला। बाहर के लोगों से बिल्कुल अकेली हो गई और ख़ुद से दोस्ती कर ली। हर किसी से भरोसा उठता चला गया था।

3) वह वक़्त तो गुज़र गया मगर मुझे यह सिखा गया कि आप जो हैं, जैसे भी हैं ख़ुद पर भरोसा कीजिए और यह कि इस दुनिया में आपके घर वालों के अलावा कोई आपका अपना नहीं होता ।

बख़्तियार (कॉलेज स्टूडेंट)

1) जब मेरा रिज़ल्ट आया और मैं बोर्ड के कुछ पेपर्स में फ़ेल हो गई तो वह वक़्त बहुत कठिन था। लोगों के सवालों और तानों ने मुझे तोड़ कर रख दिया था।

2) सबसे पहला रीएक्शन यह था कि लोगों के बिहेवियर और हालात की सख़्ती ने मुझे अपनी जान लेने पर तैयार कर डाला था। ऐसा लगता था कि मुझे जीने का हक़ ही नहीं है। अपने आप से नफ़रत हो गई थी। ऐसे में मेरे घर वालों ने ही मुझे संभाला। बाहर के लोगों से बिल्कुल अकेली हो गई और ख़ुद से दोस्ती कर ली। हर किसी से भरोसा उठता चला गया था।

3) वह वक़्त तो गुज़र गया मगर मुझे यह सिखा गया कि आप जो हैं, जैसे भी हैं ख़ुद पर भरोसा कीजिए और यह कि इस दुनिया में आपके घर वालों के अलावा कोई आपका अपना नहीं होता ।

नेहा (युनिवर्सिटी स्टूडेंट)

1) युनिवर्सिटी में दुनिया का असली चेहरा यानी लोगों का दोग़लापन देखना बहुत बुरा लगा था।

2) रीएक्शन बस यह था कि इतने अच्छे और क़रीबी दोस्तों की तरफ़ से मुझे ऐसे बिहेवियर की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। यक़ीन ही नहीं आता था कि कोई इतना सेलफ़िश भी हो सकता है मगर किसी ने क्या सच कहा है कि यह दुनिया झूठी, लोग लुटेरे! यही देखा बस।

3) इस पूरे वक़्त में मैंने जान लिया कि किसी पर डिपेन्ड तो बिल्कुल नहीं होना है। जो करना है अल्लाह की मदद से अपने बलबूते पर करना है और इन अंधेरे वक़्तों में जब हर जगह सन्नाटा होता है और हम अपने आपको अकेला और खोया हुआ महसूस करते हैं तो ख़ुदा वहाँ से आसानी के रास्ते पैदा कर देता है जहाँ हम ने सोचा भी नहीं होता।

समीना (कॉलेज स्टूडेंट)

1- मेरे लिए ज़िन्दगी का सबसे मुश्किल वक़्त वह वक़्त था जब मेरे पापा मुझे और मम्मा को छोड़ कर ख़ुदा से जा मिले थे।

2- उस वक़्त कुछ समझ में नहीं आ रहा था। बस एक ख़ामोशी थी। यक़ीन ही नहीं आता था लेकिन वक़्त के साथ न चाहते हुए भी यक़ीन करना ही पड़ा। आख़िर हमें इसी दुनिया में जीना था।

3- हालात मुझे यह समझा गये कि बाप न हो तो सब अपने असली चेहरों में आ जाते हैं। हम से बहुत से रिश्तेदारों ने मिलना छोड़ दिया और जो मिलते थे वह हमारे ऊपर रहम खा रहे थे जैसे हम बहुत बेचारे हों। ऐसे मुश्किल वक़्त में अपने रब से सब्र माँगा और उसने अता किया क्योंकि वह सुनने वाला है, दुआएं क़ुबूल करता है। अब अल-हम्दोलिल्लाह ज़िन्दगी सुकून से बीत रही है।

ज़ैनब अनवर (स्टूडेंट)

1) जब मेरी फूफी की कैंसर से मौत हुई थी तो वही पल पूरी तरह से मेरी ज़िन्दगी बदल गया था। मैं उन से बहुत मोहब्बत करती थी। मैं देख रही थी कि बहुत ज़्यादा दौलत भी उन्हें कैंसर जैसी बीमारी से न बचा पाई। वह अपनी मौत को नहीं हरा सकी थीं।

2) उस वक़्त मैंने सोचा कि देखा जाए कि मौत के बाद की क्या ज़िन्दगी होती है। पढ़ा तो दिल हिल कर रह गया। मेरे आमाल बुरे थे। दुनिया में हंसते-खेलते ज़िन्दगी गुज़ारी थी और ऐसे में अपने रब से मुलाक़ात के बारे में कभी सोचा भी नहीं था।

3) वह दिन मेरे लिए सबसे बड़ी सीख देने वाला दिन था। उस दिन से मैंने यह डिसाइड कर लिया था कि अब ज़िन्दगी अपने रब के नाम कर देना है।

माहिरा (होम बेस्ड बेकर)

1) जब मैंने अपने एक जवान कज़िन की मौत के बारे में सुना तो वह पल जैसे मुझे पत्थर सा बना गया था।

2) उस वक़्त मेरा रीएक्शन यह था कि यक़ीन नहीं हो रहा था और मेरा दिल बहुत ज़्यादा दुखी था। आँसू थे कि थमते ही न थे। रब से शिकायत सी होने लगी मगर यह दर्द एक कड़वी हक़ीक़त सिखा गया।

3) मुझे इस बात का यक़ीन हो गया कि किसी को भी सारी ज़िन्दगी यहाँ नहीं रहना है। यह वक़्ती दुनिया है और सेहत या पैसे से नहीं ख़रीदी जा सकती। इसलिए हमें इसकी क़द्र करना चाहिए और इसका वैसा इस्तेमाल करना चाहिए जैसा इसका हक़ है।

सादिया ज़फ़र (लेक्चरर)

1) जब मैं 13 साल की थी तो बैक-बोन सर्जरी ज़िन्दगी का सबसे मुश्किल वक़्त था। डर था कि सर्जरी से कुछ भी हो सकता है।

2) उस वक़्त बस ख़ुदा का मज़बूत सहारा थाम कर उन पलों को बिताया था। इसी से हिम्मत और हौसला भी मिला।

3) इस चीज़ ने मुझे पहले से ज़्यादा मज़बूत कर दिया था और हर तरह के हालात का मुक़ाबला करना सिखा दिया था। यह भी सिखा दिया कि अल्लाह से हमेशा अच्छी उम्मीद ही रखना चाहिए। हमें जो कुछ भी मिलता है वह हमारे यक़ीन के हिसाब से ही मिलता है। आज अल-हम्दोलिल्लाह एक प्राइवेट कॉलेज में लेक्चरर होने के साथ-साथ एक ट्यूशन सेन्टर भी चला रही हूँ।

सानिया मतीन (फ़्रीलान्सर)

1) वह दिन कठिन होते हैं जब मेरा भाई एक साइकॉलोजिकल बीमारी (ADHD) की वजह से बड़ा अजीब सा रीएक्शन दिखाता है। अटेंशन डेफ़िसिट हाइपरएसिडिटी डिस्आर्डर एक साइकॉलोजिकल बीमारी है जो बड़ी या छोटी किसी भी उम्र में हो सकती है। इसमें इन्सान बहुत जल्दी निगेटिव रीएक्शन दिखाने लगता है। इसलिए ऐसे में मेरा भाई हर छोटी बात पर बड़ा भयानक निगेटिव रीएक्शन देने लगा है और हमें चुपचाप सहना पड़ता है।

2) मेरा दिल करता है कि घर छोड़ कर कहीं दूर चली जाऊँ। कई बार सोचती थी और शिकायत करती थी कि मेरी ही ज़िन्दगी में यह सब क्यों है? मगर थोड़ी देर में बहुत पछतावा होता कि इतने करीम रब से मैं यह सवाल करने के क़ाबिल भला मैं कहाँ हूँ? फिर उसी की पनाह में चली जाती थी और उसी से सब्र माँगती थी। मेरे भाई का बिहेवियर किसी भी ऐसी बात से बड़ा निगेटिव हो जाता है जो उसे बुरी लग जाए मगर लोग जानते हुए भी उस से इस बारे में बात करते हैं। उस वक़्त तो वह चुप रहता है मगर सारा ग़ुस्सा हमारे ऊपर निकालता है।

3- इन सब चीज़ों से यह सीखा है कि किसी को तकलीफ़ पहुँचाने वाला काम मज़ाक़ में भी नहीं करना चाहिए। हम नहीं जानते कि आपकी एक बात दूसरों की कितनी रातों की नींदें बर्बाद कर देती है। हमें गुनाहों से नफ़रत करना सीखना चाहिए, गुनाहगार से नहीं। और भी बहुत से कुछ सीखा लेकिन यह सब से अहम है।

मदीहा (डॉक्टर)

1) ऐसा वक़्त मेरी ज़िन्दगी में जब आया था जब मेरे पापा और अम्मी की डिर्वोस हुई थी। इस चीज़ ने मुझे बिल्कुल तोड़ दिया था। मैं सोचती हूँ कि कोई बाप इतना सेलफ़िश और पत्थर दिल कैसे हो सकता है कि अपने बाल-बच्चों को अकेला छोड़ कर चला जाए।

2) इन हालात को क़ुबूल करना बहुत मुश्किल था। मैं रोते-रोते सो जाती थी या बेहोश हो जाती थी क्योंकि मैं अपने पापा से बहुत मोहब्बत करती थी।

3) मुश्किल वक़्त में ज़रूर कोई न कोई अच्छाई छुपी होती है, यह वाक़िआ मेरी ज़िन्दगी को बहुत सिखा गया। उनका कहना था कि मैंने हालात से समझौता करना सीखा। शायद आपको अजीब लगे लेकिन मुझे अपने तजुर्बे से लगता है कि हर माँ, माँ और हर बाप, बाप नहीं होता। कभी-कभार ख़ून के रिश्ते भी भरोसे के लायक़ नहीं होते। भरोसे के क़ाबिल तो सिर्फ़ अल्लाह और बन्दे का रिश्ता है। हालात तो गुज़र गये और अब बहुत अच्छा वक़्त है लेकिन वह पल मेरे दिल पर अपनी अनमिट छाप छोड़ गये।

रूही इक़बाल (कॉलेज लेक्चरर)

1) माँ का इस दुनिया से जाना मेरे लिए सबसे कठिन पलों में से था जिसने मुझे झिंझोड़ कर रख दिया था।

2) जब डॉक्टरों ने उनकी मौत की ख़बर सुनाई तो मैं उन्हीं पर बरस पड़ी थी, बाद में अपने इस बिहेवियर पर बहुत पछताई भी थी।

3) सीख यह मिली कि ख़ुदा के फ़ैसलों में हम इंटरफ़ेयर करने वाले कौन होते हैं। हम चाहे किसी से कितनी ही मोहब्बत क्यों न करते हों, एक न एक दिन जुदाई होना ही है।

ज़िन्दगी के अलग-अलग मैदानों से जुड़ी इन औरतों से बातचीत के बाद यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है कि हालात में उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं जिनका मक़सद हमें जाँचना और परखना होता है कि कौन हिम्मत से काम लेकर ज़िन्दगी को काम का बनाता है और कौन इन इम्तेहान की घड़ियों से घबरा कर फ़ायदा उठाने में सुस्ती करता है।

वह लोग जो अंधेरी रात में भी उम्मीद का साथ नहीं छोड़ते, आने वाली सुबह उनकी ज़िन्दगी को रौशनी से भर देती है।

आप भी मरयम

के लिए आर्टिकल भेज सकती हैं

1. A4 साइज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकिल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार होगा।
9. आर्टिकिल के साथ अपना पूरा एड्रेस और कांटेक्ट नम्बर ज़रूर भेजिए।

इमाम मूसा काज़िम[अ०] का जिहाद

इमाम मूसा काज़िम[अ०] की ज़िन्दगी को देखने और परखने से पता चलता है कि आप[अ०] की ज़िन्दगी बहुत से बड़े-बड़े वाक़िओं से भरी है। मेरी नज़र में इमामों के सियासी मूवमेन्ट ने अपनी ऊँचाई इसी ज़माने में पाई थी है। मगर अफ़सोस इस बात का है कि आप[अ०] की ज़िन्दगी के बारे में सही इनफ़ार्मेशन हमारे पास नहीं हैं।

कहीं-कहीं इमाम काज़िम[अ०] की ज़िन्दगी को पढ़ने से यह भी पता चलता है कि इमाम काज़िम[अ०] ने कुछ दिनों तक हुकूमत की नज़रों से छुप कर भी ज़िन्दगी बिताई थी और हारून की पूरी मशीनरी आपको ढूँढने में लगी हुई थी लेकिन आपका पता नहीं लगा पा रही थी। ख़लीफ़ा हारून रशीद ने आपके कुछ ख़ास साथियों को पकड़ लिया था और उन्हें टार्चर कर रहा था ताकि इमाम[अ०] का ठिकाना जाना जा सके कि कहां है लेकिन वह अपनी इस कोशिश में कामयाब नहीं हो सका था।

इमामों की ज़िन्दगी में इस से पहले ऐसा कोई और नमूना नहीं मिलता है। इब्ने शहरे आशोब ने अपनी किताब ''मनाक़िब'' में एक रिवायत लिखी है जिस से यह नतीजा समझ में आता है कि इमाम काज़िम[अ०] ख़ामोशी के साथ शाम के कुछ इलाक़ों में चले गए थे।

इस तरह की कोई चीज़ किसी और इमाम के बारे में नहीं मिलती।

इस से इमाम[अ०] की ज़िन्दगी में पाए जाने वाले मूवमेन्ट का अन्दाज़ा होता है और उसी को देखने से यह बात समझ में आ जाती है कि आख़िर आप[अ०] को क्यों इतनी लम्बी क़ैद की सख़्तियाँ झेलनी पड़ीं। वरना आप ने सुना होगा कि शुरु में जब हारून रशीद ख़िलाफ़ के तख़्त पर बैठा था और फिर किसी मौक़े पर मदीने आया था तो उसने इमाम मूसा काज़िम[अ०] के साथ बहुत अच्छा और मेहरबानी भरा बर्ताव किया था।

यह रिवायत जो मामून की ज़बानी बयान की गई है बहुत मशहूर है: वह कहता है कि इमाम काज़िम[अ०] जब एक बार महल की तरफ़ आए तो उन्होंने अपनी सवारी से उतरना चाहा लेकिन हारून ने आप[अ०] को ऐसा नहीं करने दिया और क़सम दी कि आप[अ०] को मेरे तख़्त तक यूँ ही सवार होकर चलना होगा। इसलिए आप उसी तरह सवार होकर वहाँ तक पहुँचे। सब ने इमाम[अ०] की बड़ी इज़्ज़त की और फिर आपस में अच्छे माहौल में बातचीत भी हुई। जब इमाम[अ०] जाने लगे तो हारून ने मुझ (मामून) से और अमीन से कहा कि अबुल हसन की रेकाब थाम लो।

एक दिलचस्प बात जो इस रिवायत में मामून ने बताई है वह यह है: मेरे बाप हारून ने सब लोगों को पाँच-पाँच हज़ार और दस-दस हज़ार दीनार (या दिरहम) दिये और मूसा इब्ने जाफ़र[अ०] को दो सौ दीनार दिये जबकि हारून ने जब इमाम से उनके हालात पूछे तो इमाम ने अपनी परेशानी और पैसों की कमी के साथ-साथ अपने बच्चों की बड़ी तादाद के बारे में भी बताया था।

यह बातें इमाम[अ०] की ज़बान से शायद अजीब सी लगें और हमारे दिमाग़ में कुछ सवाल भी खड़े हों लेकिन ख़ुद मैं भी और वह लोग भी जिन्होंने ईरान के बादशाह के ज़माने में पॉलिटिकल जिहाद के ज़माने में तक़ैय्ये का तजुर्बा किया है वह इन हालात को अच्छी तरह से जानते-समझते और महसूस कर सकते हैं। उन्हें अच्छी तरह अन्दाज़ा हो सकता है कि इमाम[अ०] का हारून जैसे आदमी के सामने इस तरह अपनी परेशानी का ज़िक्र करने का क्या मतलब था। इमाम[अ०] ने क्यों कहा था कि मेरी हालत अच्छी नहीं है, मुश्किल से ज़िन्दगी कट रही है? इस तरह की बातों से यह नतीजा नहीं निकालना चाहिए कि यह ज़िल्लत की निशानी है और ऐसा करना अच्छा नहीं है। हम और आप जानते हैं कि ईरान में रज़ा शाह जैसे ज़ालिम बादशाह की हुकूमत के ज़माने में जानबूझ कर हम में से बहुत से लोग इस तरह की बातें किया करते थे। हर आदमी समझ सकता है कि इन्सान इस तरह की सख़्तियों के ज़माने में दुश्मन को अपनी असली हालत और अपने कामों से दूर रखने के लिए इस तरह की बातें किया करता है।

बहरहाल होना तो यह चाहिए था कि इमाम[अ०] की इन बातों के बाद इमाम[अ०] को कोई बड़ी रक़म जैसे पचास हज़ार दीनार (या दिरहम) दी जाना चाहिए थी लेकिन हारून ने सिर्फ़ दो सौ दीनार दिये थे।

मामून कहता है: मैंने अपने बाप से इसकी वजह से पूछी तो उन्होंने कहा कि जो रक़म मुझे उन्हें देना चाहिए थी अगर मैं दे दूँ तो मुझे डर है कि कुछ दिनों के बाद वह अपने दोस्तों और शियों में से एक लाख तलवार चलाने वाले मेरे ख़िलाफ़ खड़े कर देंगे।

हारून ऐसा ही सोचता था और मेरी नज़र में हारून ने ठीक ही समझा था।

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि इमाम[अ०] के बारे में हारून की यह सोच इमाम[अ०] के ख़िलाफ़ होने वाली शिकायतों का नतीजा है। जो भी है यह एक सच्चाई थी। उस ज़माने में जबकि इमाम[अ०] हारून के ख़िलाफ़ जिहाद करने में लगे हुए थे अगर सच में उस वक़्त इमाम[अ०] के पास दौलत होती तो ऐसे बहुत से लोग थे जो आपकी कमान में तलवारें चलाने पर तैयार थे और उसके नमूने हमें इमामों की औलाद के मूवमेन्ट्स में दिखाई भी देते हैं।इन ज़ालिम बादशाहों से मुक़ाबला करने के लिए इमाम[अ०] अपने आसपास एक बड़ी तादाद इकट्ठा कर सकते थे।

इसलिए इमाम बाक़िर[अ०] का ज़माना जिहाद के लिए सबसे अच्छा ज़माना कहा जा सकता है जिसकी वजह से आपको गिरफ़्तार भी कर लिया गया था।

ख़ुदा के बैंक में डिपॉज़िट कीजिए

■ इब्ने हैदर मूसवी

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हम जब किसी अच्छे काम में पैसा ख़र्च करते हैं तो शैतान हमें बहकाने लगता है कि लो! पैसा हाथ से चला गया। अब तुम्हें पैसे की ज़रूरत होगी तो क्या करोगे ?जबकि इसके उलट सचचाई यह है कि इसके ज़रिये से हमें बहुत सा फ़ायदा भी मिलता है, बिल्कुल उस बीज की तरह जिसे किसान ज़मीन के अंदर बो देता है और बदले में कई गुना पाता है या जैसे कोई बैंक में जाकर अपने पैसे डिपॉज़िट कर देता है। दिखने में तो वह अपना पैसा बैंक में बैठे कैशियर को दे रहा होता है लेकिन असल में वह पैसा उसके अकाउन्ट में जमा हो रहा होता है।

दीन की नज़र में ख़ुदा के नाम पर ख़र्च करना भी कुछ ऐसा ही है। यानी ख़ुदा के साथ ऐसा सौदा करना जिसमें हमारा ही फ़ायदा है और इसके ज़रिये हमारा ही माल ज़्यादा होता है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः "जब तुम्हारा माल कम हो जाए तो सदक़ा देकर ख़ुदा के साथ कारोबार कर लो।"

एक जगह पर इमाम अली[अ०] ने दुनिया को ख़ुदा के चाहने वालों के लिए कारोबार का बाज़ार बताया है।

ख़ुदा से कारोबार का एक ज़रिया सदक़ा देना, इनफ़ाक़ करना और दूसरों की मदद करना भी है जिसके नतीजे में इन्सान ख़ुदा की तरफ़ से कई गुना अज्र और सवाब पाता है।

एक जगह इमाम अली[अ०] वसिय्यत करते हुए फ़रमाते हैंः "इन ख़त्म हो जाने वाले दिनों में बाक़ी रहने वाले दिनों के लिए कुछ सामान इकटठा कर लो क्योंकि तुम्हारा रास्ता बिल्कुल साफ़ है और तुम सफ़र के लिए तैयार हो, तुम्हें आख़िरत के लिए पैदा किया गया है और तुम्हारा माल जल्दी ही तुम से अलग होने वाला है, तुम इस माल से क्या करना चाहते हो ?"

इन्सान माल छोड़ कर चला जाता है लेकिन उसे पता होना चाहिए कि उसे इस माल का हिसाब ख़ुदा के सामने देना है, क्या अच्छा नहीं होगा कि वह यहीं पर इनफ़ाक़ और ख़ैरात के ज़रिये ख़ुदा के यहाँ कुछ माल डिपॉज़िट कर दे और जब उसे ज़रूरत हो तो वहाँ से ले ले ?

माल ख़त्म हो जाने वाला है। जब तक हाथ से न जाए तब तक इसे इनफ़ाक़ के ज़रिये बर्बाद होने से हम बचा सकते हैं बल्कि हमेशा के लिए बाक़ी रख सकते हैं।

मौत जब आती है तो यह इन्सान को या तो कामयाब करती है या नाकाम। इसलिए दुनिया से बेहतरीन सामान उठाकर ख़ुद को आख़िरत के अज़ाब से बचाना चाहिए।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः "बेहतरीन सामान के साथ दुनिया से सफ़र करो।"

इस नज़र से देखा जाऐ तो सवाल यह पैदा होता है कि क्या सदक़ा और इनफ़ाक़ इन्सान को कामयाबी की गारन्टी देता है या नाकामी की? यह फ़ायदा है या नुक़सान ?खोना है या पाना ?

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं कि आख़िरी ज़माने में ऐसे लोग आएंगे जो उस ज़माने में सदक़े को घाटा और नुक़सान समझेंगे।''

इसकी वजह यह है कि उन्होंने अपनी आँखों पर आख़िरत को देखने वाला चश्मा नहीं लगाया होगा और ख़ुदा के लिए इनफ़ाक़ की बरकतों से अंजान होंगे। उन्हें ख़ुदा के वादों पर पक्का ईमान भी नहीं होगा कि वह ख़ुदा के साथ कोई कारोबार कर सकें।

हर सफ़र के लिए उसके वक़्त, मक़सद और उसके ख़ास हालात के हिसाब से अपने काम भर का सामान तैयार करना पड़ता है। आख़िरत के सफ़र का सामान अच्छे काम, नेकियाँ और ख़ैरात है जिसका एक ज़रिया इनफ़ाक़ या सदक़ा है।

हज़रत अली[अ०] अपनी इस हदीस में रास्ते के लिए सामान की कमी, रास्ते के लम्बा होने, सफ़र की दूरी और एक बड़े मक़सद यानी क़यामत की बात कर रहे हैं और एक ठंडी आह खींचते हुए फ़रमाते हैं: ''सफ़र का सामान कितना कम है और सफ़र कितना लम्बा!''

इसका इलाज भी हज़रत अली[अ०] ने ही बताया है: ''जो मौत के इन्तेज़ार में हो वह अच्छे कामों की रफ़्तार बढ़ा देता है।''

हम चाहे मौत का इन्तेज़ार न भी कर रहे हों, लेकिन मौत हमारे इन्तेज़ार में बैठी है, ताकि हमें उचक कर दुनिया वालों के बीच से ले जाए। मौत के ख़तरों भरे सफ़र से ग़फ़लत बरतना दुनिया से दिल लगाने और इनफ़ाक़ से दूर होने की वजह बनता है। लेकिन मौत को याद रखने का नतीजा यह होता है कि इन्सान इस सफ़र की तैयारी करता है और आगे आने वाले सफ़र के लिए सामान इकटठा करने लगता है। इस तैयारी का एक तरीक़ा पहले से ही आख़िरत की तरफ़ सामान भेजना है।

इमाम अली[अ०] इस तैयारी की तरफ़ भी इशारा करते हुए फ़रमाते हैं: ''जिसे रास्ते के लम्बे होने की जानकारी होगी, वह उसी हिसाब से ख़ुद को तैयार करेगा।''

आराम से आख़िरी पड़ाव तक पहुँचना और हर उतार-चढ़ाव या ख़तरों से गुज़रने के लिए ज़रूरी है कि इन्सान के पास बोझ कम हो। ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करने से इन्सान का बोझ हलका हो जाता है और रास्ते से गुज़रने की उम्मीद बढ़ जाती है। जब तक हम अपनी मंज़िल तक पहुँचें उस से पहले ही हमारा सामान वहाँ पहुँच चुका होता है।

हज़रत अली[अ०] इस रास्ते, इस बोझ, इस मंज़िल और यहाँ से गुज़रने को बेहतरीन तरीक़ा यूँ बताते हैं:

''जान लो कि तुम्हारे सामने एक लम्बा और ख़तरों भरा रास्ता है और तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि इस सफ़र के लिए ज़रूरी सामान तैयार कर लो जो तुम्हें तुम्हारे मक़सद तक पहुँचा सके। इसके लिए अपने बोझ को हलका कर लो ताकि रास्ता चलने से तुम्हारी कमर न झुक जाए। इसलिए अपनी पीठ पर हद से ज़्यादा भारी बोझ न लादो, यह भारी बोझ तुम्हारे लिए मुसीबत बन जाएगा। जब भी तुम्हें कोई ज़रूरतमन्द मिले जो तुम्हारा बोझ उठा कर ले जाए और क़यामत के दिन तुम्हें लौटा दे और उस दिन वापस कर दे जब तुम्हें उसकी ज़रूरत हो, तो ऐसे मौक़े को हाथ से मत जाने दो। अपना बोझ उसे दे दो, बल्कि जितना बोझ हो सके उसके काँधे पर रख दो क्योंकि हो सकता है कि तुम आगे बढ़ जाओ लेकिन पलट कर आओ तो उसे न पाओ। अगर तुम पैसे वाले हो और कोई तुम से क़र्ज़ा माँगता है ताकि उस दिन तुम्हें लौटा दे जब तुम्हें उसकी ज़रूरत है, तो इस मौक़े को भी हाथ से मत जाने दो...।''

यह प्यारी सी मिसाल हमें समझा रही है कि अगर दुनिया में कोई इन्सान किसी ज़रूरतमन्द को क़र्ज़ देता है, उसके साथ इनफ़ाक़ करता है या उसकी किसी तरह से मदद करता है तो आख़िरत में सब उसे लौटा दिया जाएगा। यह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे किसी जोश मारते दरिया के ऊपर लरज़ते हुए पुल से गुज़रते हुए कोई आपका बोझ उठा ले और पुल के उस पार आपका बोझा आपको लौटा दे। ऐसे में ज़रूर हम सब उसका शुक्रिया भी अदा करेंगे।

इनफ़ाक़ की मिसाल ऐसी ही है यानी मौत के उस पार के लिए किसी के हाथों अपना सामान भेजना।

एक ईरानी शायर सायब तबरेज़ी कहते हैं:

ऐ ख़ुदा की तरफ़ क़दम बढ़ाने वाले! तुम ने लोगों से जो नेकी की है, उसकी बुनियाद पर सुकून के साथ आगे बढ़ो क्योंकि तुम्हारा बोझ उस ज़रूरतमन्द ने अपने कन्धों पर उठा लिया है जिसकी तुम ने मदद की है।

हज़रत अली[अ०] इस बारे में फ़रमाते हैं: ''अपनी दौलत में से कुछ हिस्सा इनफ़ाक़ और ख़ैरात या सदक़े के ज़रिये आगे भेज दो ताकि वह क़र्ज़े के तौर पर तुम्हारे लिए ख़ुदा के यहाँ बचा रहे।''

शरई अहकाम

सवालः क्या औरतों के लिए भी तक़लीद करना ज़रूरी है ?

जो कोई भी ख़ुद इज्तेहाद न कर सकता हो या एहतियात पर अमल न कर पाए तो उसके लिए आख़िरी रास्ता तक़लीद का ही बचता है।

इसमें मर्द और औरत में कोई फ़र्क़ नहीं।

इसलिए औरतों के लिए भी तक़लीद करना ज़रूरी है।

सवालः क्या कलेजी और भेजा खाना मकरूह है ?

आयतुल्लाह ख़ामेनई और आयतुल्लाह सीस्तानी के नज़दीक मकरूह नहीं है।

सवालः क्या टाइट या शार्ट हिजाब पहना जा सकता है ?

हिजाब का मतलब है कि जिस्म की बनावट को छुपाया जाए और यह काम टाइट या शार्ट हिजाब में नहीं किया जा सकता।

इसलिए हिजाब के लिए ढीला-ढाला और सर से पैर तक ढकने वाला हिजाब होना ज़रूरी है।

इसी लिए सबसे अच्छा हिजाब चादर है।

सवालः क्या देवर के लिए भाभी और बहनोई के लिए साली महरम हैं ?

नहीं! देवर-भाभी और साली-बहनोई एक-दूसरे के लिए नामहरम हैं।

सवालः क्या मुँह बोले बाप, भाई या चचा से भी पर्दा करना वाजिब है ?

जी हाँ! यह लोग नामहरम हैं।

ख़ुद से किसी को बाप, भाई या चचा कह देने से वह महरम नहीं हो जाता।

इसलिए ऐसे हर आदमी से हिजाब करना वाजिब है।

सवालः अगर जमाअत से नमाज़ अव्वले वक़्त पर नहीं हो रही है बल्कि थोड़ी देर बाद हो तो क्या ऐसे में फ़ुरादा पढ़ना ज़्यादा ठीक है या फिर जमाअत का इन्तेज़ार करना ?

अव्वले वक़्त पर नमाज़ पढ़ने के लिए हदीसों में बहुत ज़ोर दिया गया है लेकिन जो सूरत ऊपर सवाल में बताई गई है उसमें जमाअत से पढ़ना बेहतर है। इसलिए जमाअत का इन्तेज़ार करना चाहिए।

सवालः क्या क्रीम लगा कर वुज़ू किया जा सकता है ?

अगर उसकी चिकनाई की वजह से पानी खाल (स्किन) तक न पहुँच सके तो वुज़ू सही नहीं हो पाएगा।

लेकिन अगर इतनी चिकनाई न हो और पानी खाल तक पहुँच रहा हो तो कोई हरज नहीं है।

सवालः क्या औरतें जमाअत से नमाज़ पढ़ सकती हैं ?

जमाअत की शर्तों पर अमल करते हुए बिल्कुल पढ़ सकती हैं।

सवालः नमाज़ की हालत में औरत के लिए जिस्म के किन हिस्सों का छुपाना ज़रूरी है ?

जिस्म के तीन हिस्सों के अलावा पूरे जिस्म और बालों का छुपाना औरत के लिए वाजिब है।

इन तीन हिस्सों का छुपाना वाजिब नहीं हैः

1- चेहरा जितना वुज़ू में धोया जाता है।

2- हाथः कलाई से उंगलियों के सिरे तक।

3- पैरों में गट्टों के नीचे का हिस्सा।

चाहे नमाज़ पढ़ने की जगह पर उसको देखने वाला कोई न भी हो तब भी इन तीन हिस्सों को छोड़कर बाक़ी सारे बदन को छुपाना ज़रूरी है।

लेकिन अगर नामहरम देख सकता हो तो पूरे पैर का छुपाना भी ज़रूरी है।

सवालः क्या जुल्म के ख़िलाफ औरतें भी प्रोटेस्ट कर सकती हैं ?

अपने हिजाब का ध्यान रखते हुए ज़रूर प्रोटेस्ट करना चाहिए क्योंकि जुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना औरत व मर्द सबकी ज़िम्मेदारी है।

सवालः क्या औरत (वाइफ़) के लिए अलग से ख़ुम्स निकालना वाजिब है ?

जब मर्द (हज़बेन्ड) ख़ुम्स का हिसाब कर रहा हो तो अगर औरत अपनी सेविंग्स भी उसी में मिला दे या उसी के साथ हिसाब कर ले तो उसको अलग से ख़ुम्स निकालने की ज़रूरत नहीं है।

लेकिन अगर औरत अपनी सेविंग्स का उसके साथ हिसाब नहीं करती तो उसके लिए अलग से ख़ुम्स निकालना वाजिब है।

सवालः क्या औरत जॉब या कोई भी दूसरी सर्विस कर सकती है ?

अपने हिजाब का ध्यान रखते हुए कर सकती है।

बच्चों की अच्छी तरबियत और अच्छी परवरिश किसी भी औरत की सबसे पहली ज़िम्मेदारी है। इसलिए जब तक बहुत मजबूरी न हो, अगर तब तक औरत जॉब न करे तो बेहतर है क्योंकि लाइफ़ स्टैण्डर्ड को मेनटेन करने या अच्छा बनाने के लिए बच्चों की तरबियत से समझौता करना कहीं से कहीं तक ठीक नहीं है।

सवालः क्या एक शादीशुदा सुहागन (जिसका शौहर ज़िन्दा हो) औरत सफ़ेद कपड़े पहन सकती है ?

बिल्कुल पहन सकती है।

बल्कि कपड़ों का बेहतरीन रंग सफ़ेद ही है।

इस्लाम में न शादी से लाल रंग जुड़ा हुआ है और न ही बेवा औरत से सफ़ेद रंग बल्कि यह सब समाजी रस्में हैं।

(आयतुल्लाह ख़ामेनई और आयतुल्लाह सीस्तानी के फ़तवों के मुताबिक़)

احکام

क़ुरआन
की तरफ़ लौटने ही में भलाई है

■ यावर अब्बास रिज़वी

सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई फ़रमाते हैं:

क़ुरआन ज़िन्दगी की किताब है, हिदायत की किताब है और क़ुरआन इन्सान के लिए ख़ुदा की आयतों का एक बहुत बड़ा ख़ज़ाना है। क़ुरआन इन्सान को तरक़्क़ी की तरफ़ लेकर जाता है। जो आदमी दिल से इस किताब की इज़्ज़त करता है वह असल में अपनी, अपनी सोच की और अपने अमल की क़ीमत बढ़ा लेता है।

मुसलमानों को क़ुरआन से अलग करने के लिए बहुत सालों तक कोशिश की गई और दुख इस बात का है कि कोशिश करने वाले यह लोग अपने मक़सद में कामयाब भी हो गये। इस लम्बे टाइम में इस्लामी समाज में क़ुरआन मजीद की ज़ाहिरी शक्ल के अलावा कुछ नहीं बचा है। जो किताब हर ज़माने के इन्सानों की हिदायत के लिए आई थी वह किताब इस्लामी सोसाइटी में भी कुछ रस्मों को पूरा करना का ज़रिया बना दी गई है। क़ुरआन मजीद को उसकी असली हैसियत से दूर ज़रूर कर दिया गया, लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि मुस्लिम क़ौमों का ईमान क़ुरआन से कभी नहीं उठा और यह ख़ुद क़ुरआन का एक मोजिज़ा है।

क़ुरआन के साथ मुसलमानों का बर्ताव उस मक़सद से मैच नहीं करता जिसके लिए क़ुरआन भेजा गया था। क़ुरआन इसलिए आया था ताकि इन्सानों को अंधेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ हिदायत कर सके। यह एक ऐसी किताब थी जिसमें हिदायत के लिए हर चीज़ मौजूद थी और इन्सानों के सभी सवालों के जवाब मौजूद थे। यह किताब इन्सान की पूरी ज़िन्दगी के लिए काफ़ी थी मगर अब रस्मों में बंध कर रह गई है।

हमें यह बात जान लेना चाहिए कि बड़ी ताक़तें क़ुरआन मजीद को अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझती हैं। वह नहीं चाहतीं कि इन्सानी ज़िन्दगी की इमामत और हिदायत क़ुरआन मजीद के हाथ में हो। इसलिए सभी मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि क़ुरआन मजीद की तरफ़ ध्यान दें और इसके लिए एक मूवमेन्ट के रूप में काम करें।

अगर क़ुरआन मुसलमानों की ज़िन्दगी में जगह बना ले तो मुसलमान क़ौमों पर बड़ी ताक़तों का कंट्रोल ख़त्म हो जाएगा।

सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई ने एक बार कहा था:

हम ने अपने मुल्क में साफ़-साफ़ देखा है कि हमारा समाज क़ुरआन से बहुत दूर हो गया था। यह हमारी ज़िन्दगी की एक कड़वी सच्चाई थी। क़ुरआन को भुलाया जा चुका था।

अच्छी बात यह हुई कि हमारे इन्क़ेलाब ने क़ुरआन को वापस सोसाइटी में खड़ा कर दिया। इस इन्क़ेलाब ने हम लोगों को भी क़ुरआन से जोड़ दिया है। क़ुरआन की तरफ़ लौटने का असर यह हुआ कि हमारे समाज में क़ुरआन की तिलावत, तफ़सीर और तजवीद बच्चे-बच्चे तक के दिल में जगह बनाने लगी और क़ुरआन में उनकी दिलचस्पी बढ़ने लगी।

ख़ुशी की बात यह है कि अब हमारे सोशल मूवमेन्ट का सेन्टर क़ुरआन मजीद है। हम शुरू से यही चाहते थे। अब हमारे समाज ने क़ुरआन के उसूलों और इसकी सिखाई हुई बातों पर चलने का पक्का फ़ैसला कर लिया है। अभी हम इस काम में पूरी तरह से कामयाब नहीं हुए हैं लेकिन काफ़ी हद तक अच्छी कोशिशें ज़रूर हुई हैं और अब भी हो रही हैं।

एक जगह सुप्रीम लीडर कहते हैं: हमारे समाज में क़ुरआन की तिलावत का शौक़ इस बात की निशानी है कि क़ुरआन हमारे समाज में वापस आ गया है। समाज में क़ुरआन का आम होना बहुत ज़रूरी है। अभी तक जो कुछ हुआ है वह सिर्फ़ एक क़दम है। अभी इसके बाद हमें सौ क़दम और उठाना हैं। लोगों को चाहिए कि वह क़ुरआन पढ़ना सीखें, क़ुरआन को हिफ़्ज़ (याद) करें और इसे पूरे समाज में फैलाएं। हमारे घरों में हमेशा क़ुरआन की तिलावत होना चाहिए।

अल्लाह के रसूल[स०] फ़रमाते हैं: ''मेरी उम्मत के अच्छे लोग वह हैं जो रातों को इबादत करते और क़ुरआन को उठाने वाले हैं।

क़ुरआन उठाने का मतलब क्या है? कुछ लोग कहते हैं कि क़ुरआन उठाने का मतलब क़ुरआन पर चलना है।

क़ुरआन पर चलना बहुत ज़रूरी है लेकिन बस यही

काफ़ी नहीं है बल्कि क़ुरआन से दिल लगाना भी बहुत ज़रूरी है।

इसका तरीक़ा यह है कि क़ुरआन को पढ़ा जाए, क़ुरआन को याद किया जाए, घरों से क़ुरआन की तिलावत की ख़ूबसूरत आवाज़ें आए, जवान नस्ल क़ुरआन पढ़े, बच्चे क़ुरआन सीखें यानी सभी क़ुरआन पढ़ें। माँएं अपने बच्चों को क़ुरआन सिखाना ज़रूरी समझें। बाप अपने बच्चों को क़ुरआन से क़रीब करें और इसके लिए उन्हें नसीहत करना अपनी ड्युटी समझें।

क़ुरआन के नाम और इसकी आवाज़ से पूरे समाज को आबाद कीजिए। हमारी ज़िन्दगी में क़ुरआन की ख़ुश्बू हर तरफ़ फैल जाना चाहिए। इसके बग़ैर निजात नहीं मिल सकती।

इस्लाम के शुरु के पीरियड में क़ुरआन मुसलमानों के दिलों में बसा हुआ था। जो आदमी क़ुरआन की आयतें लिखता था, उन्हें याद करता था और क़ुरआन की आयतों की तिलावत करता था उसे समाज में बड़ी इज़्ज़त से देखा जाता था। ऐसा आदमी अल्लाह के रसूल[स०] को भी बहुत प्यारा होता था।

अल्लाह के रसूल[स०] ने लोगों के दिलों में क़ुरआन का जो सिक्का बिठाया था और मुसलमानों के बीच क़ुरआन से मोहब्बत का जो माहौल बनाया था वह एक लम्बे टाइम तक बाक़ी रहा था। लोग क़ुरआन से जुड़े रहे थे। क़ुरआन पूरे समाज में अपनी जगह बना चुका था।

इस्लामी हुकूमत और इस्लामी समाज में गिरावट बस उसी वक़्त से शुरू हो गई थी जब से क़ुरआन समाज से दूर कर दिया गया था।

जब तक मुसलमान में क़ुरआन से मोहब्बत बाक़ी थी तब तक दुनिया में डूबे हुए और पैसे के पुजारी बादशाह खुल कर गुनाह और लोगों पर जुल्म नहीं कर सकते थे। हिस्ट्री में ऐसे वाक़िए मिलते हैं कि मुसलमानों ने ख़लीफ़ा के सामने क़ुरआन के ज़रिये मुक़ाबला और बहस करके उसे लाजवाब कर दिया था। यह बनी उमय्या और किसी हद तक बनी अब्बास के पीरियड तक चलता रहा था।

क़ुरआन मजीद हक़ और बातिल के बीच फ़र्क़ करने वाला समझा जाता था। जब ख़लीफ़ा की बातें और उसकी ज़िंदगी क़ुरआन से मेल नहीं खाती थी तो लोग उस से पूछा करते थे और एतेराज़ करते थे कि वह क़ुरआन के ख़िलाफ़ क्यों कर रहा है।

इसलिए क़ुरआन मजीद को लोगों की ज़िन्दगी से दूर करने की कोशिशें शुरु कर दी गयीं। यहाँ तक कि बनी उमय्या के कुछ लोगों ने क़ुरआन मजीद को तीरों से छलनी भी कर दिया था। हिस्ट्री में यह सब चीज़ें लिखी हुई हैं।

सुप्रीम लीडर ईरान में क़ुरआन से जुड़े कामों को आगे बढ़ाने पर ज़ोर देते हुए कहते हैं:

आज अगर हम समाज में क़ुरआनी मूवमेन्ट को मज़बूत करना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि लोगों के बीच क़ुरआन मजीद तिलावत की शक्ल में भी ज़िन्दा रहे।

हमारे समाज में क़ुरआनी मूवमेन्ट उसी वक़्त आगे बढ़ सकता है जब लोग पूरी तरह से क़ुरआन को समझ लें। इसलिए ज़रूरी है कि समाज में क़ुरआन के लेक्चर्स, क़ुरआन की तिलावत, क़ुरआन की बातें और क़ुरआनी साइंसेस को फैलाया जाए। क़ुरआन से प्रोग्रामों को बढ़ाया जाए और क़ुरआन के तरह-तरह के कम्प्टीशंस कराए जाएं।

जो लोग क़ुरआन पढ़ा सकते हैं और क़ुरआन को समाज में फैलाने की सलाहियत रखते हैं वह अपनी बस एक ड्युटी समझें और वह है क़ुरआन के काम आना।

ख़ुदा फ़रमाता है:

''यह वह किताब है जिसे हम ने आपकी तरफ़ से भेजा है ताकि तुम्हें ख़ुदा के हुक्म से अन्धेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले आए और ख़ुदा के रास्ते पर लगा दे।''[1]

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया है:

जब फ़ितने अंधेरी रातों में तुम्हारे लिए उलझनें पैदा कर दें तो तुम्हें क़ुरआन का सहारा लेना चाहिए क्योंकि क़ुरआन शिफ़ाअत करने वाला है और इसकी शिफ़ाअत क़ुबूल की जाती है। जिसने इसे अपने सामने रखा उसे क़ुरआन जन्नत में ले जाएगा और जिसने क़ुरआन को पीछे डाल दिया उसे क़ुरआन जहन्नम में पहुँचा देगा।

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया:

''याद रखो! यह क़ुरआन ऐसा हमदर्द और ऐसा नसीहत करने वाला है जो कभी धोखा नहीं देता। ऐसा रास्ता दिखाने वाला है जो कभी गुमराह नहीं करता। ऐसी बातें बताने वाला है जो कभी झूठ नहीं बोलता। जो भी क़ुरआन का साथी बनता है वह उसके पास से हिदायत लेकर और गुमराही कम करके उठता है।''

आयतुल्लाह ख़ामेनई इन्क़ेलाब से पहले के हालात की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं:

हम लोग भी क़ुरआन से दूर थे। क़ुरआन के दुश्मनों की बनाई गई साज़िशों का शिकार थे।

क़ुरआन की तरफ़ लौटने में क्या मज़ा है इसके बारे में कुछ नहीं जानते थे। लेकिन जब हम क़ुरआन की तरफ़ पलटे तो हम ने इसका ख़ूब असर देखा। हमारा इन्क़ेलाब इसी की एक बरकत है। आज हम अपनी सोशल लाइफ़, सोशल रिलेशन्स, गवर्नेंस, अपनी फ़ॉरेन पॉलीसी, अपनी एजुकेशन और अपने परवरिश के सिस्टम में क़ुरआनिक टीचिंग्स के कुछ नमूने आसानी से देख सकते हैं।

अभी तक क़ुरआन नाम की इस ''जन्नत'' का बस एक झोंका ही हम तक पहुँचा है, अभी हम इस जन्तन के अन्दर नहीं गये हैं लेकिन इसके अन्दर जाने का रास्ता खुला है और सबके लिए खुला।

1-सूरए इब्राहीम/1

■ प्रोफ़ेसर अतहर सिद्दीक़ी

ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सीख

एक नौजवान ने ज़िन्दगी का सबसे अहम लेसन अपने पड़ोसी से सीखा था। जैक ने पिछली बार उस आदमी को जब देखा था तब से अब तक काफ़ी वक़्त गुज़र गया था। कॉलेज, दोस्तियाँ, जॉब, उसकी अपनी ज़िन्दगी और उसका काम बीच में आ गये थे।

असल में जैक अपने शहर से बहुत दूर अपने ख़्वाबों की तलाश में मुल्क के दूसरी तरफ़ निकल गया था। वहाँ वक़्त की कमी और बिज़ी लाइफ़ स्टाइल ने वक़्त ही नहीं छोड़ा था कि वह पिछली ज़िंदगी के बारे में कुछ सोच सकता, और कई बार तो उसके पास इतना वक़्त भी नहीं होता था कि अपनी बीवी और बेटे के साथ कुछ देर बिता सके। वह अपने फ़्युचर के लिए काम कर रहा था और कुछ भी उसको रोक नहीं सकता था।

एक दिन फ़ोन पर उसकी माँ ने उसे बतायाः

''कल रात हेस्लर साहब मर गए हैं। बुध के दिन उन्हें दफ़्न किया जाएगा।''

पिछली यादें उसके दिमाग़ में न्यूज़ रील की तरह गुज़र गईं और वह बैठ कर बचपन की बहुत सी पुरानी बातें याद करने लगा।

''जैक... तुम ने सुना, मैंने क्या कहा?'' उसकी माँ ने पूछा।

''जी! मैंने आपकी बात सुन ली। कितना वक़्त गुज़र गया उनके बारे में सोचे हुए। मुझे अफ़सोस है, मैं तो यह समझा था कि वह काफ़ी वक़्त हुआ इस दुनिया से जा चुके होंगे।'' जैक ने जवाब दिया।

''लेकिन वह तुम को नहीं भूले थे। जब भी मैं उन से मिलती थी वह तुम्हारे बारे में ज़रूर पूछते थे कि तुम क्या कर रहे हो? वह उन दिनों को याद किया करते थे जब तुम ने उनके साथ उनके घर में वक़्त बिताया था।'' उसकी माँ ने उसे बताया।

''मुझे उनका वह पुराना घर बहुत पसन्द था जिसमें वह रहते थे।'' जैक ने जवाब दिया।

''क्या तुम जानते हो जैक! जब तुम्हारे पापा इस दुनिया से चले गए थे तो हेस्लर साहब ने यह ज़िम्मेदारी ले ली थी कि तुम्हारी ज़िन्दगी में एक मर्द का रोल निभाएं।'' जैक की माँ ने बताया।

''उन्होंने ही मुझे बढ़ई का काम सिखाया था।'' जैक ने कहा।

''आज मैं फ़र्नीचर के काम में ही न होता, यह सब उन ही की मेहनत का नतीजा है। वह मेरे साथ बहुत वक़्त बिताते थे और मुझे वह सब बातें सिखाते थे जो अहम होती थीं।'' जैक ने अपनी माँ को बताया और कहाः

''माँ... मैं उनके दफ़न के प्रोग्राम में ज़रूर पहुँच जाऊँगा।''

बहुत बिज़ी होने के बाद भी उसने अपना वादा पूरा किया। जैक अगली फ़्लाइट से अपने घर पहुँच गया। हेस्लर साहब को बहुत ही सादगी और ख़ामोशी के साथ दफ़न किया गया था। उनकी अपनी कोई औलाद नहीं थी और उनके काफ़ी रिश्तेदार पहले ही मर चुके थे।

लौटने से एक रात पहले जैक और उसकी माँ अपने पड़ोसी के घर के अन्दर गये, उस घर को आख़िरी बार देखने के लिए। दरवाज़े पर खड़े होकर जैक पल भर के लिए रुका और पिछली यादों में खो गया। घर आज भी उसी हालत में था, जैसा उसे याद था, कुछ भी नहीं बदला था। हर क़दम पर यादें ताज़ा हो रही थीं। हर पिक्चर से, हर फ़र्नीचर से जो वहाँ था, यादें जुड़ी थीं। जैक एक दम से रुक गया।

''क्या हुआ जैक?'' माँ ने पूछा।

''वह बॉक्स कहाँ चला गया?'' जैक ने कहा।

''कौन सा बॉक्स?'' माँ ने पूछा।

''एक सुनहरा बॉक्स था जिस पर हमेशा ताला लगा रहता था और वह उनकी मेज़ पर रखा रहता था। मैंने उन से हज़ार बार पूछा होगा कि इस में क्या है? और वह हमेशा यह कहते थे कि एक ऐसी क़ीमती चीज़ है जो मेरे लिए बहुत अनमोल है।'' जैक ने

अपनी माँ को बताया।

वह बॉक्स अब अपनी जगह पर नहीं था। घर में हर चीज़ वैसे ही थी जैसी जैक को याद थी, उस बॉक्स को छोड़ कर। उसने सोचा कि हेस्लर साहब का कोई रिश्तेदार ले गया होगा। ''अब मुझे कभी भी पता नहीं चल पाएगा कि उस बॉक्स में वह अनमोल चीज़ क्या थी?'' जैक ने माँ से कहा और बोलाः

''अब मुझे चलकर सो जाना चाहिए, कल सुबह सवेरे मेरी फ़्लाइट है।''

हेस्लर साहब को मरे हुए दो हफ़्ते हो गये होंगे। घर लौटते हुए जैक को अपने पोस्ट बॉक्स में एक नोट मिला जिस पर लिखा थाः

''पार्सल की डिलिवरी के लिए साइन की ज़रूरत है, घर पर कोई नहीं मिला, पार्सल हेड पोस्ट ऑफ़िस से तीन दिन के अन्दर ले लीजिए।''

अगले दिन जैक ने पार्सल ले लिया। वह छोटा सा पार्सल एक पुराने काग़ज़ में लिपटा था और ऐसा लग रहा था कि जैसे सौ साल पहले डाक से भेजा गया हो। उस पर हाथ की लिखाई बड़ी मुश्किल से पढ़ी जा सकती थी, लेकिन उस पर लिखे एड्रेस ने उसका ध्यान अपनी तरफ़ खींच लिया था जिस पर लिखा थाः मिस्टर हेराल्ड हेस्लर। जैक ने कार में बैठते ही हेस्लर साहब के पार्सल को बेचैनी से खोल डाला। अन्दर वही सुनहरा बॉक्स और एक लिफ़ाफ़ा निकला। जैक के हाथ काँप रहे थे जब उसने नोट पढ़ा जिसमें लिखा थाः

''मेरे मरने के बाद मेहरबानी करके यह बॉक्स और इसके अन्दर जो कुछ भी है, ख़त के साथ जैक बेनेट को भेज दिया जाए। यह मेरी सबसे क़ीमती चीज़ है और मैंने अपनी ज़िन्दगी में सबसे ज़्यादा इसी को संभाल कर रखा है।''

एक छोटी सी चाबी लिफ़ाफ़े पर टेप से लगी हुई थी। उमंडते हुए आँसुओं और धड़कते दिल से जैक ने बॉक्स का ताला खोल डाला। अन्दर एक बहुत ही ख़ूबसूरत सोने की घड़ी निकली, धीरे से उसने घड़ी पर हाथ फेरते हुए उसका केस खोला। अन्दर लिखा हुआ थाः

''जैक... शुक्रिया तुम्हारे वक़्त का जो तुम ने मेरे साथ गुज़ारा। हेराल्ड हेस्लर।''

उसने जिस चीज़ की सबसे ज़्यादा क़द्र की, वह ''वक़्त'' था।

जैक ने काफ़ी देर तक घड़ी को अपने हाथों में पकड़े रखा और अगले दो दिनों के लिए अपने आफ़िस फ़ोन करके सब काम कैंसिल कर दिये।

''क्यों?'' उसकी सेक्रेट्री जेनेट ने पूछा।

''मुझे कुछ वक़्त अपने बेटे के साथ बिताने के लिए चाहिए और हाँ... जेनेट तुम्हारा भी शुक्रिया मेरे लिए काम करने का।''

HK

KAZIM
Zari Art

All kinds of
Sarees, Suits, Lehnga
& Designer Wedding Gown

Work shop
Ahata Dhannu Beg, kazmain Road
Sa'adat ganj, Lucknow

Showroom
1st floor, Doctor Gopal Pathak Building
latouch road, Hevett road Lucknow

Contact No.
+91-9795907202, 9839126005

Subscription Form

हां, मैं, नीचे लिखी स्कीम के तहत **मरयम** की सब्सक्राइबर बनना चाहती/चाहता हूं।

S.No.:................

निशान	साल	इश्यूज़	सालाना कवर कीमत	आप दें
☐	1 Year	12	360	360
☐	2 Year	24	720	700
☐	3 Year	36	1080	1000

*Name: Mr./Mrs./Miss ______________________ Date of birth: Day ___ Month ___ Year ____

*Father/Husband'sName: ______________________

Education: ______________________ Profession: ______________________

*Address: H/No: ______________________

Post : ______________________

City/Vill.: __________ Distt.: __________ State: __________ Country.: __________

Land Mark.: __________ Pin: __________ P.O.Box No.: __________

*Mobile No: __________ Phone (Res) __________

e-mail: ______________________

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें: ____ Date .... Signature............................

For Office Use:

subscription from...............................to..........................Subscription ID ____ Receipt no. ....

Address: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

सब्सक्राइबर्स सुविधाएं अगले अंक से उपलब्ध होंगी. समस्त विवाद केवल लखनऊ के सक्षम न्यायालयों और फोरमों के विशिष्ट अधिकार क्षेत्र के अधीन है.

यह आर्डर फार्म भेजी जाने वाली रकम के साथ भेजें।

*नियम व शर्तें लागू।

मैग्ज़ीन नार्मल डाक से भेजी जाती है। रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए Rs. 240 और देना होंगें।

Monthly Magazine

मरयम

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 email: maryammonthly@gmail.com

इजाज़ा

मरयम मैग्ज़ीन को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए इसको लागत से आधी क़ीमत पर रीडर्स को दिया जाता है जिसकी वजह से इदारे को आप सभी लोगों की फ़ाइनेंशल मदद की सख़्त ज़रूरत है।

हमारी कोशिश है कि इस मैग्ज़ीन के ज़रिए दीनी मालूमात को बेहतरीन क्वालिटी में आप सभी लोगों तक पहुंचाया जाता रहे।

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

LUCKNOW-INDIA

इजाज़ा आयतुल्लाह सीस्तानी

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

P.O.Box No.:37 Chowk Lucknow UP-India

इजाज़ा आयतुल्लाह ख़ामेनई

RNI NO. UPHIN/2012/43577

ENGLISH MEDIUM

taha
SCHOOL

Our Focus

- CBSE Curriculum
- Low Student-Teacher ratio
- Interactive teaching techniques
- Loving and caring atmosphere
- Qualified & Dedicated Teachers
- Deeni Taleem

ADMISSION OPEN
Pre-School To Class V

Pre-School Also Available

MUSAHIB GANJ, LUCKNOW

8840206083, 6392442920